₹15/-

★ वर्ष 43 ★ अंक 8

★ अगस्त 2016

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 43 ● अंक 8 ● अगस्त 2016 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
17. समाचार
20. वर्ग पहेली
33. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. जन्मदिन मुबारक
47. आपके पत्र मिले
48. रंग भरो परिणाम
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

विशेष / लेख

6. दोस्त के बिना नहीं खाई...
8. राखी का त्योहार
: सुमेश कुमार
10. गुरुभक्त सन्त अवनीत जी
: विमलेश आहूजा
16. आजादी
: सीताराम गुप्ता
18. भारत में प्रथम
: ओमसिंह पंवार
24. मस्तिष्क : दिलचस्प जानकारी
: मीना
26. पहेलियां
: जगतार 'चमन'
30. क्या होती है विश्व धरोहर
: विद्या प्रकाश
32. देखो और खोजो
: अजय डिमरी
32. इस तरह बना रेनकोट
: विद्या प्रकाश
41. आदमी से पहले...
: कैलाश जैन

कविताएं

9. प्यारा–प्यारा अपना देश
: डॉ. दिनेश चमोला
16. आजादी हमने पाई है
: रामअवध राम
19. हॉकी का जादूगर
: डॉ. परशुराम शुक्ल
29. प्यारा भारत देश हमारा
: हरजीत निषाद
38. देश की शान
: नदीम हसन
43. दो बाल कविताएं
: घमण्डीलाल अग्रवाल

कहानियां

21. राखी का रंग
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'
25. मातृभूमि से प्रेम
: रूपनारायण काबरा
27. तरीका अच्छी पढ़ाई का
: मनोहर चमोली
39. कालू सुधर गया
: महेन्द्र सिंह शेखावत

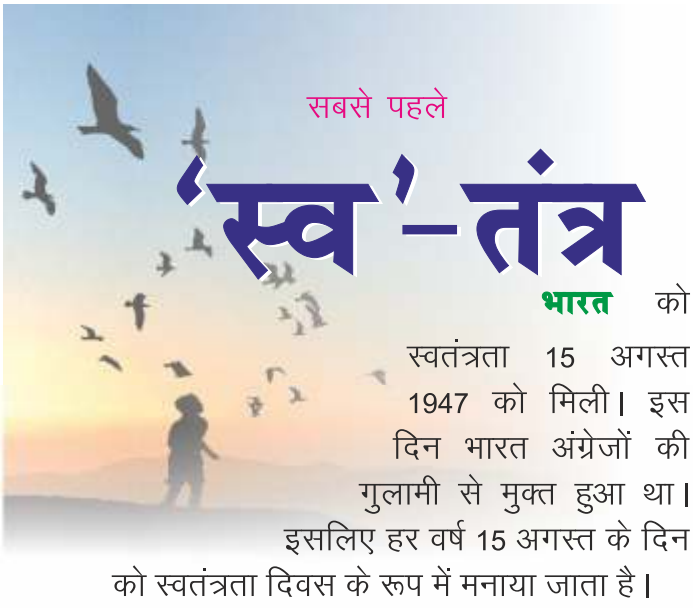

सबसे पहले

'स्व'-तंत्र

भारत को स्वतंत्रता 15 अगस्त 1947 को मिली। इस दिन भारत अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था। इसलिए हर वर्ष 15 अगस्त के दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हर जीव–आत्मा निरंकार–प्रभु को मिलकर आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाती है। इसी तथ्य को साकार करने हेतु निरंकारी मिशन द्वारा अगस्त माह में मुक्ति दिवस मनाया जाता है।

साधारणतः स्वतंत्रता का अर्थ यह लगाया जाता है कि मैं अपनी मर्जी से हर कार्य करने को स्वतंत्र हूँ, मुझे किसी से इजाजत लेने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं अपना मालिक हूँ, कुछ भी करने को। खान–पान, बोलचाल व रहन–सहन पर कोई प्रतिबन्ध स्वीकार न करने को ही स्वतंत्रता मान लिया गया है। यह भी सुनने को मिलता है कि 'मैं किसी की परवाह नहीं करता', 'मैं किसी का गुलाम या नौकर नहीं' इत्यादि। इस तरह के अनेकों वाक्य हर जगह, शहर, देश में अपने–अपने ढंग से सुने जाते रहे हैं।

प्यारे साथियों, सोचने का विषय यह है कि क्या स्वतंत्रता दूसरों को कुछ न समझना एवं स्वयं को दूसरों से ऊँचा दिखाने का नाम है या अपने अहम् के प्रदर्शन के अतिरिक्त कुछ और भी? क्या हम अपने तन्त्र को ठीक ढंग से जानते हैं?

स्वतंत्रता का अर्थ है 'स्व' अर्थात् स्वयं के, अपने या खुद के तन्त्र (अर्थात् सिद्धान्त, कर्म, पद्धति या ढंग) को जान लेना।

जब व्यक्ति अपने 'स्व' को जान जाता है तो वह किसी और पर आश्रित नहीं रहता। वह 'स्व' की सुनता है और मानता है। आज हम सभी यह कहते तो हैं कि मैं अपना मालिक हूँ परन्तु कोई भी हमें कुछ गलत कह दे तो हम तुरन्त ही क्रोध में आ जाते हैं और दूसरे को भला–बुरा कहने लगते हैं। अगर हमने किसी की बात के उत्तर का प्रत्युत्तर दे दिया तो हम अपने मालिक न रहकर दूसरे के सवाल–जवाब के अधीन हो जाते हैं। यही अधीनता हमें अपने से दूर ले जाती है और हम दूसरों की बातों के अनुरूप अपने आपको बदलते चले जाते हैं। अगर कोई हमें बुरा कहे तो हम बुरे; अगर कोई हमें अच्छा कहे तो हम अच्छे। यही धारणा हमें परतंत्र बना देती हैं।

सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज ने कई बार अपने प्रवचनों में यह भी कहा– ''लोग चाहे कुछ भी कहें और मैं चुप रहूँ, न जाने यह सलीका मुझे कब आएगा।''

जब मुझे यह समझ आ जाएगा कि मैं किसी की कठपुतली नहीं कि किसी ने मुझे कुछ भी कह दिया और मैं उसकी तर्ज पर नाचने लगूँ। मुझे तो केवल अपनी अन्तःचेतना में खुद को देखना है कि मेरा क्या स्वरूप है।

''मैं चुप रहना चाहता हूँ और मुझे कोई बोलने को बाध्य न कर सके। अपने आनन्द से बाधित न होना ही मेरी स्वतंत्रता है।'' मुझे तो शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से और आत्मिक रूप से एक लय में रहना है। जैसे बर्तन को साफ करते हैं तो उसको अन्दर और बाहर दोनों तरफ से साफ किया जाता है। परन्तु अन्दर से बर्तन को अधिक साफ किया जाता है जिससे उसमें रखा सामान अधिक सुरक्षित रहे। इसी तरह हमें अपने 'स्व' को अन्दर से अर्थात् मन को भी स्वस्थ, पवित्र और निर्मल बनाना है। स्वस्थ, पवित्र और निर्मल मन ही शान्त रह सकता है और दूसरों को भी इसी तरह की ऊर्जा सम्प्रेषित कर, सबका कल्याण कर सकता है– यही है 'स्व' की स्वतंत्रता।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 135

एह निरंकार वड्डे तों वड्डा इस दा पारावार नहीं।
जोगी जती ज्ञानी कोई जाणन इसदी सार नहीं।
सूरज चन्द सितारे सारे हुकम एहदे विच रहन्दे ने।
वायु जीव अकाश वी इसदे हुकम 'च उठदे बहन्दे ने।
पाणी अग्ग ते धरती इसदा मन्नदे ने फरमान सदा।
कण कण सृष्टि दा हुन्दा ए एसे तों कुरबान सदा।
एह चाहे तां छिन दे अन्दर सारी सृष्टि मेट लये।
चाहे जद विस्तार 'च कर लये चाहे जदों समेट लये।
नाशवन्त ए माया सारी बाकी केवल सुच्चा तूं।
कहे अवतार बिना गुर पूरे हो नहीं सकदा उच्चा तूं।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह निरंकार–प्रभु बड़े से बड़ा अर्थात् सबसे बड़ा है। इसके जैसा विशाल अन्य कोई नहीं है, इसका कोई पारावार, कोई आदि–अन्त नहीं है। योगी, यती, ज्ञानी कोई भी इसकी सार नहीं जान सके। सूर्य, चाँद, सितारे सभी इसके हुक्म में चलते हैं। वायु, जीव, आकाश भी इसी के हुक्म से उठते, बैठते, गतिशील रहते हैं। पानी, अग्नि और धरती भी इसी निरंकार–प्रभु की आज्ञा मानते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि इस सृष्टि में नौ प्रकृतियां अर्थात् सूर्य, चाँद, तारे, वायु, जीव, आकाश, धरती, पानी, आग सभी इस निरंकार प्रभु की ही आज्ञा में चल रहे हैं। सृष्टि का कण–कण सदा इस पर कुर्बान जाता है। यह सर्वशक्तिमान प्रभु चाहे तो क्षणभर में सारी सृष्टि को मिटा सकता है और यह चाहे तो इसका विस्तार कर सकता है। परमात्मा की ये रचनाएं परमात्मा के हुक्म में बंधी हुई हैं। दृश्यमान समस्त माया नाशवान है केवल निरंकार–परमात्मा ही सत्य है, पावन–पवित्र है।

बाबा अवतार सिंह जी प्रेरणा दे रहे हैं कि हे इन्सान! बिना पूरे सद्गुरु की कृपा के तेरा इस सच्चे प्रभु के साथ मिलाप नहीं हो सकता और न ही तू ऊँचा हो सकता है। इन नौ प्रकृतियों के स्वामी इस निरंकार को पूर्ण सद्गुरु की कृपा से जानकर ही पावन–पवित्र और ऊँचा हुआ जा सकता है।

संस्मरण

स्कूल में गर्मी से पिघली चॉकलेट, दोस्त के बिना नहीं खाई निरंकारी बाबा हरदेव सिंह ने

निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी के साथ 7 साल तक पटियाला के वाईपीएस स्कूल की क्लास में एक मेज पर साथ बैठकर पढ़ने वाले प्रदीप घुम्मण बाबा जी के निरंकार में लीन होने पर बेहद दुखी हैं। बाबा जी के साथ बिताए समय को याद करते हुए बताते हैं कि बाबा जी स्कूल टाईम में बेहद शांत रहने वाले थे। बाबा जी को चॉकलेट का इतना शौक था कि वे अपनी मेज बॉक्स में उनके लिए भी कई चॉकलेट छुपाकर रखते थे। कभी भी चॉकलेट अकेले नहीं खाते थे। एक दिन गर्मियों में मेरे लिए चॉकलेट छुपाकर रखी। क्लास खत्म होने के बाद जब मुझे चॉकलेट दी तो वो पिघलकर लिक्वड बन गई। फिर दोनों दोस्तों ने उसे आधा–आधा खाया। एक मेज पर साथ बैठना, खाना इकट्ठा खाना, फिर शाम को खेलना भी एक साथ।

बाबा हरदेव सिंह ने 11 फरवरी, 1963 को वाईपीएस स्कूल में चौथी क्लास के सेक्शन बी में एडमिशन ली। वे 10वीं क्लास तक यहाँ पढ़े और 22 दिसम्बर, 1969 को स्कूल छोड़ा।

प्रदीप घुम्मण के मुताबिक जब 10वीं के बाद बाबा जी पटियाला छोड़ गये तो उनकी मुलाकात दोबारा तब हुई जब बाबा जी निरंकारी मिशन के प्रमुख बन गए थे। मंसूरी में वह डरते–डरते बाबा जी से मिले, लेकिन बाबा जी ने अपनी सीट से उठकर उन्हें गले लगाया। अपने साथ कुर्सी दी। अपने परिवार से उसी गर्मजोशी से मिलवाया जैसे दो पुराने दोस्त मिलते हैं। फिर तो वह बाबा जी को कई बार अलग–अलग समागमों में जाकर मिले।

प्रदीप घुम्मण के मुताबिक उस समय पटियाला के डॉ. राजीव अग्रवाल, कालका से सूद ब्रदर्स, जगाधरी से कुशल कुमार सभी बाबा हरदेव सिंह जी के पक्के दोस्त होते थे।

अनमोल वचन

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा कहे गये पावन वचन

- ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।
- ब्रह्म की प्राप्ति, भ्रम की समाप्ति।
- एक को जानो, एक को मानो, एक हो जाओ।
- स्वस्थ विचार ही मन को स्वस्थ करने में सहायक होते हैं।
- प्यार भरा वातावरण बनाये रखें।
- परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।
- जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।
- अभिमान जूते में कंकर की तरह होता है जो दुःख ही देता है।
- हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रहकर उनकी (बात) भी मानें।
- अगर किसी को मरता–कुचलता देखकर अपने मन में खुशी महसूस करते रहेंगे तो हम धार्मिक नहीं हैं।
- विश्व शान्ति का आध्यात्मिक ही एक मात्र साधन है।
- जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।
- अहिंसा से ही मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है।
- मानवता ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।
- मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।
- इन्सान को नफरत की बजाय प्रेम और हिंसा के मार्ग के बजाय शान्ति की राह पर चलना चाहिए।
- परमात्मा की जानकारी कर आत्मबोध करना ही इन्सान के जीवन का प्रमुख लक्ष्य है।
- सत्य से कमाया गया धन हर प्रकार से सुख देता है। छल व कपट से कमाया धन दुख ही दुख देता है।
- काश! संसार के सभी इन्सानों को मिलजुल कर रहने का सलीका प्राप्त हो जाये।
- स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती हैं जैसे समुद्र में नदियां।

आलेख : सुमेश कुमार

राखी का त्योहार

रक्षाबन्धन का त्योहार प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। जुलाई या अगस्त के महीने में पड़ने वाले इस पावन त्योहार को भाई–बहन के प्यार के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। रक्षाबन्धन में जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि धागे का बहुत महत्व है। राखी में कच्चे सूत से लेकर, कलावा (मोली), रेशमी धागे या सोने–चांदी जैसी कीमती धातुओं का भी प्रयोग किया जाता है।

प्रातः स्नान आदि के बाद बहनें पूजा की थाली सजाती हैं। जिसमें राखी के अलावा हल्दी, चावल, रोली, मिठाई, फल आदि सजाकर भाई को टीका लगाती हैं और राखी बांधकर मिठाई खिलाती हैं। भाई उपहार स्वरूप कुछ वस्तुएं, रुपये बहनों को भेंट करते हैं। बहनें भाई की दीर्घ आयु की कामना करती हैं। भाई सुख–दुःख में साथ निभाने का विश्वास दिलाते हैं। रक्षाबन्धन का त्योहार भाई–बहन के पवित्र रिश्ते को पूरा आदर व सम्मान देता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय जनजागरण के लिए गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने बंग–भंग का विरोध करते हुए रक्षाबन्धन त्योहार को बंगाल निवासियों के पारस्परिक भाईचारे तथा एकता का प्रतीक बनाकर इस त्योहार का उपयोग किया था।

पौराणिक कथाओं के अनुसार देव–दानव युद्ध में देवराज इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी ने मंत्र शक्ति युक्त धागा अपने पति इन्द्र के हाथों में बांधा था जिससे वो दानवों से विजयी हुए थे। यह धागा धन, शक्ति, हर्ष और विजय देने वाला माना जाता है।

राजपूत योद्धा जब लड़ाई पर जाते थे तब उनकी पत्नियां उनको तिलक लगाकर रेशमी धागा बांधती थीं और उनकी विजय की कामना करती थीं। मेवाड़ की रानी कर्मावती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर रक्षा का आग्रह किया था और हुमायूँ ने युद्ध में सहयोग देकर रानी कर्मावती की रक्षा की थी।

भारत के इस सुन्दर त्योहार का मूल भाव प्यार और अपनत्व को बढ़ावा देना है। राखी के त्योहार को हिन्दी फिल्मों में बहुत अच्छे गीतों द्वारा भी महत्व प्रदान किया गया है। राखी प्यार भरा सुन्दर त्योहार है।

कविता : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

प्यारा-प्यारा अपना देश

जैसे नदियों का जल सागर, में मिलकर हो जाता एक।
वैसे ही हर मानव रग में, बहता रक्त सदा ही एक।
उसी तरह से धरती, यहाँ वहाँ सब जगह एक।
भावनाएं एक हृदय की, भाषाएं हैं किंतु अनेक।

रंग लहू का रहा एक है, बहे एक–सी सदा समीर।
सब मानव, मानव धरती पर, चाहे कोई रंक अमीर।
नाते–रिश्ते हैं समान जब, फिर मानव में दूरी क्यों।
हिंसा नफरत वाली फिर है ऐसी मजबूरी क्यों।

हरे–भरे ये पेड़ जुटाते, सब जीवों को छाया एक।
प्रकृति मनोहर प्रेम लुटाती, सब की सुन्दर काया एक।
तारे सबको शीतल करते, सबका मामा चंदा एक।
देश हमारा एक सलौना, मानव भी हैं एक।

भूल सकें हम भेदभाव गर, बन जायेगा उपवन एक।
सभी फूल खुशबू फैलाते, होते उनके रंग अनेक।
भारत माता के सपूत बन, दें जग को ऐसा संदेश।
सारा विश्व कुटुम्ब है अपना, प्यारा प्यारा अपना देश।

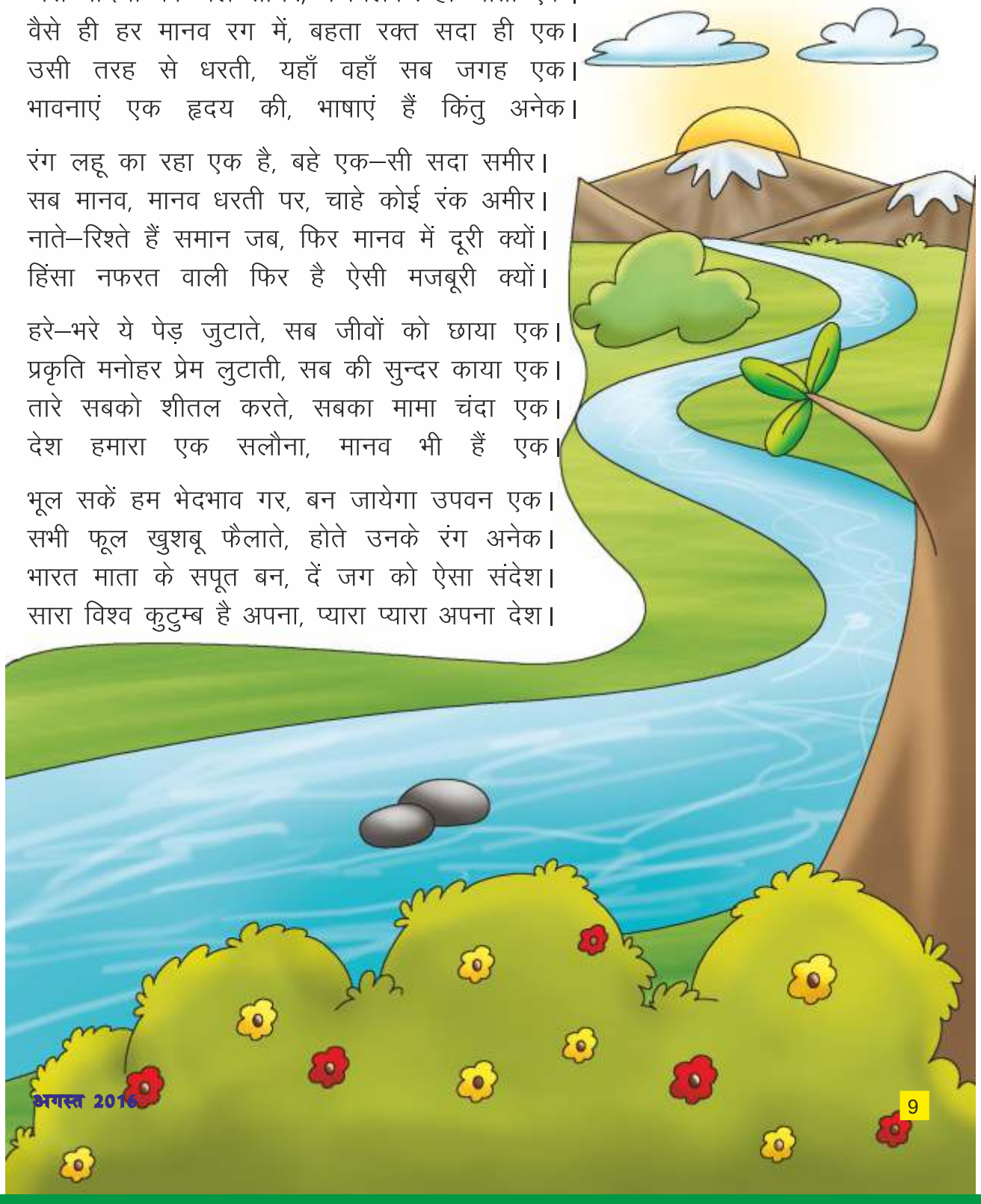

गुरुभक्त सन्त अवनीत जी

– विमलेश आहूजा

कर्म ही जीवन है। संसार में जब शिशु का जन्म होता है और जब तक वह संसार से विदा नहीं हो जाता वह कर्मशील ही रहता है। बिना कर्म के जीवन का सार ही नहीं है। कुछ व्यक्ति कर्म करते हैं जीवनयापन के लिए, परिवार को चलाने के लिए या उनका भरण–पोषण करने के लिए। कुछ लोग जिनके पास जीविका के सब साधन होते हैं, परन्तु फिर भी वे कुछ और पाने के लिए दिन–रात दौड़ते रहते हैं। उनमें धन की लालसा, शारीरिक–बलिष्ठता, सामाजिक–प्रतिष्ठा और दूसरों के ऊपर अधिकार जमाने का लोभ हमेशा जाग्रत रहता है।

परन्तु कुछ लोग केवल निष्काम कर्म को ही महत्ता देते हैं क्योंकि वे जीवन में कर्म को ही सर्वोच्च स्थान देते है। साधारणतः व्यक्ति कर्म करते समय ही उसके फल का आंकलन करने लगता है और कुछ तो केवल फल को पाने के लिए ही कर्म करते हैं। यह बात तो सत्य और निश्चित है कि कर्म का फल तो अवश्य मिलता है परन्तु कब और किस समय; यह कभी–कभी केवल विधि के द्वारा निर्धारित होता है। परन्तु कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो केवल मानवता के लिए शुभ कर्म करते हैं और उनकी लगन केवल उनके कर्म में ही खो जाती है। यद्यपि वह उसका प्रारब्ध अवश्य बनती है फिर भी उस व्यक्ति को बांधती नहीं क्योंकि कर्म करने वाला आसक्त होकर कर्म नहीं कर रहा होता बल्कि विधाता के कार्य समझकर, अपनी सम्पूर्ण चेतना में प्रभु को बसाकर कार्य करता है।

ऐसे ही महान व्यक्तित्व के धनी युवा सन्त का नाम था– अवनीत सेतिया। आपका जन्म 9 जुलाई, 1987 को पंचकूला में पिता सतीश सेतिया एवं माता कमला सेतिया के घर में हुआ। आपके माता–पिता पुरातन समय से निरंकारी मिशन से जुड़े हैं और आपको भी उनके उच्च संस्कारों ने आपकी चेतना को प्रभु–उन्मुख कर दिया।

केवल पांच वर्ष की आयु में ही आपने ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर ली। आपकी निरन्तर

सेवा, सुमिरण, सत्संग की लगन ने 10 वर्ष की आयु तक आपको पूर्णतः ज्ञान में जीवन जीने की दिशा मिल गई। फिर आपके हर कर्म में असीम श्रद्धा और भक्ति का अनमोल संगम दिखाई देने लगा। आपका व्यवहार माता–पिता, बहन–भाई और मित्रों से बहुत ही सौहार्दपूर्ण होने लग गया था। यह केवल ब्रह्मज्ञान को आचरण में लाने का परिणाम था। आपने सत्य की जानकारी को आत्मसात किया और हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने की ठान ली। सत्य के प्रति इतने जागरूक रहकर आपने हर कार्यक्षेत्र में कर्म को अंजाम दिया और यही अवस्था आपको आनन्द के चरम तक ले गई और आप सत्–चित् और आनन्द में मिलकर उसी जैसे हो गये और यहीं से आपके स्वभाव में सबको आदर देने का भाव प्रबल होता चला गया और अपनी मन्द और मृदु मुस्कान से सबका दिल जीतते चले गये।

मृदु मुस्कान से सभी का मन मोह लेने वाले सन्त को प्यार से 'अवि' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। आप बचपन से ही शान्त एवं मौन स्वभाव के व्यक्तित्व के धनी थे। नम्रता, करुणा आपका श्रृंगार था। आपने अपनी मानव तन की यात्रा में अनेकों तरह के रोल किए। पहले पुत्र का, फिर भाई का, सगे–सम्बन्धियों में एक रिश्तेदार का, अपने कार्यक्षेत्र में अभिनय करने का और मित्रों के संग मित्रता का। सभी तरह की भूमिका में आपने अपनी योग्यता को साबित किया और हर 'रोल' में आप खरे उतरे। आप वार्षिक सन्त–समागम के गुरुवन्दना कार्यक्रमों में भी भाग लेते थे, और आपने अभिनय में गुरु के आदेशों को कर्म में ढालने को हमेशा महत्व दिया। आपके अभिनय में भी कर्मयोगी जीवन की साक्षात् झलक मिलती रही। फिर एक समय आया एक भक्त का, एक गुरसिख का, उसमें आपने अपने आपको इतना समर्पित कर दिया कि आप में और गुरसिख या भक्त में पर्यायवाची का सम्बन्ध हो गया। अवनीत कहें या गुरसिख, भक्त अथवा कर्मयोगी–सन्त सभी का अर्थ एक ही हो गया।

सद्गुरु के हर वचन को अपना वास्तविक धर्म मानकर कर्म का रूप देना आपका स्वभाव बन गया। इन सबके परिणामस्वरूप आपको सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज एवं माता सविन्दर जी की सुपुत्री सुश्री सुदीक्षा जी का साथ एक जीवनसाथी के रूप में मिला। आपने सुदीक्षा जी को सद्गुरु का आशीर्वाद ही माना और इसके लिए अपनी कृतज्ञता भी प्रकट की। आपने सुदीक्षा जी को पूरा आदर एवं सम्मान दिया।

निष्काम भाव से किया कर्म एवं भक्ति हमेशा परिणाम देती है। आपको सद्गुरु का साथ और सान्निध्य दोनों ही प्राप्त हुए। आपने सद्गुरु को सद्गुरु ही जानकर उनकी सेवा, भक्ति और आराधना की। आपने सांसारिक रिश्ते का कोई 'गुमान' नहीं रखा। इसलिए ही आप पूर्ण भक्त और गुरसिख के रूप में स्थापित हो गये। आप सद्गुरु के साथ, उनके ज्ञान के साथ और उनके हर कर्म के साथी हो गये। आपने भी अपने नश्वर शरीर को उसी समय त्याग दिया जब सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज साकार से निराकार हुए। इस तरह के थे महान कर्मयोगी सन्त 'श्री अवनीत सेतिया जी।'

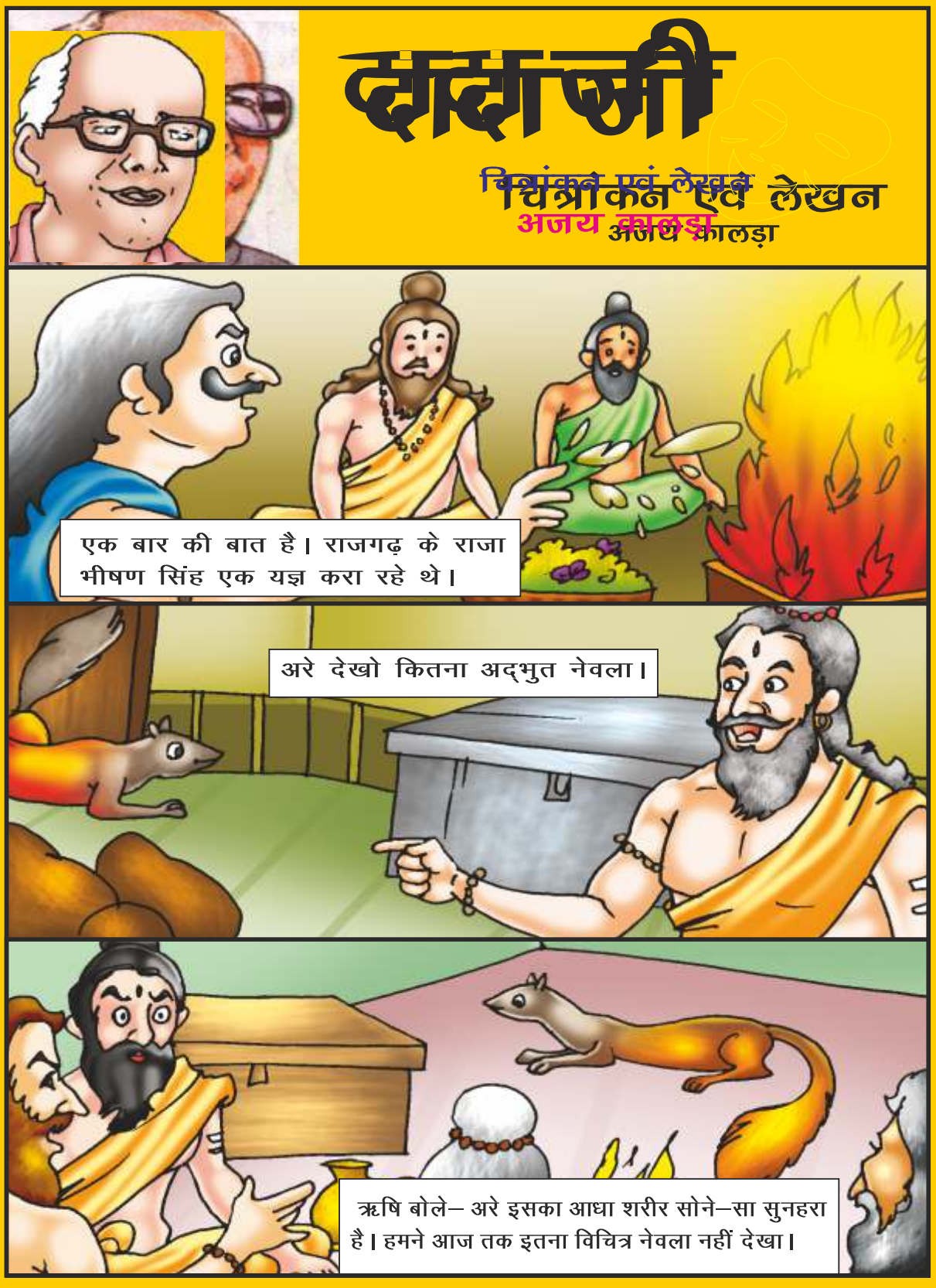
दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक बार की बात है। राजगढ़ के राजा भीषण सिंह एक यज्ञ करा रहे थे।
अरे देखो कितना अद्भुत नेवला।
ऋषि बोले– अरे इसका आधा शरीर सोने–सा सुनहरा है। हमने आज तक इतना विचित्र नेवला नहीं देखा।

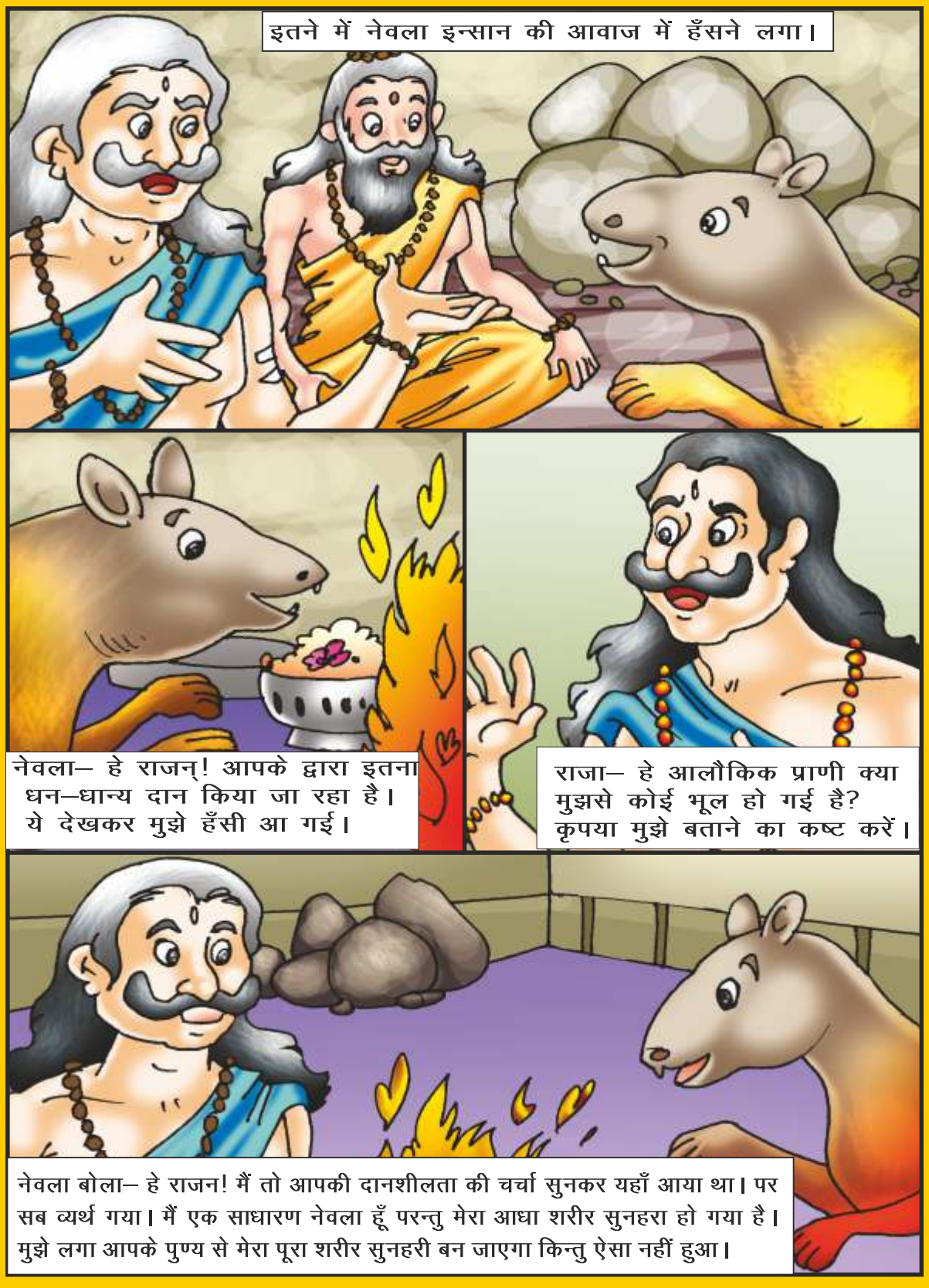
इतने में नेवला इन्सान की आवाज में हँसने लगा।
नेवला– हे राजन्! आपके द्वारा इतना धन–धान्य दान किया जा रहा है। ये देखकर मुझे हँसी आ गई।
राजा– हे आलौकिक प्राणी क्या मुझसे कोई भूल हो गई है? कृपया मुझे बताने का कष्ट करें।
नेवला बोला– हे राजन! मैं तो आपकी दानशीलता की चर्चा सुनकर यहाँ आया था। पर सब व्यर्थ गया। मैं एक साधारण नेवला हूँ परन्तु मेरा आधा शरीर सुनहरा हो गया है। मुझे लगा आपके पुण्य से मेरा पूरा शरीर सुनहरी बन जाएगा किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

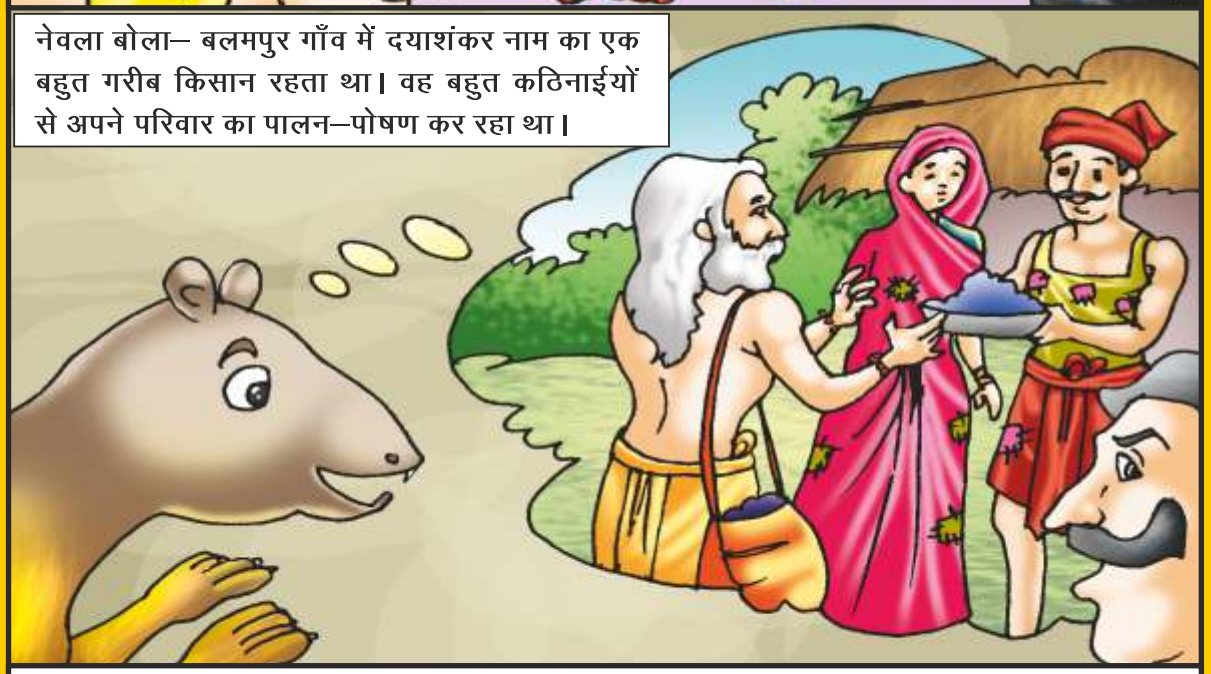

एक बार गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। दोनों पति, पत्नी ने बहुत दिनों से भोजन नहीं किया था। उनकी हालत देखकर गाँव में किसी ने उन्हें अन्न दिया। जैसे ही वे भोजन करने लगे। तभी एक भूख से व्याकुल साधू आ गया। उन्होंने वह भोजन साधू को दे दिया परन्तु कई दिनों से भूखे रहने के कारण उन दोनों का देहान्त हो गया।

साधू जब भोजन करने लगा तो भोजन के कुछ दाने पत्तल में बच गये थे। उस पत्तल पर मैं लोट लगाने लगा और वे दाने मेरे शरीर को चिपक गये जिससे मेरा शरीर सुनहरी हो गया। किसान की दानशीलता की बराबरी आपका यह यज्ञ नहीं कर सकता।

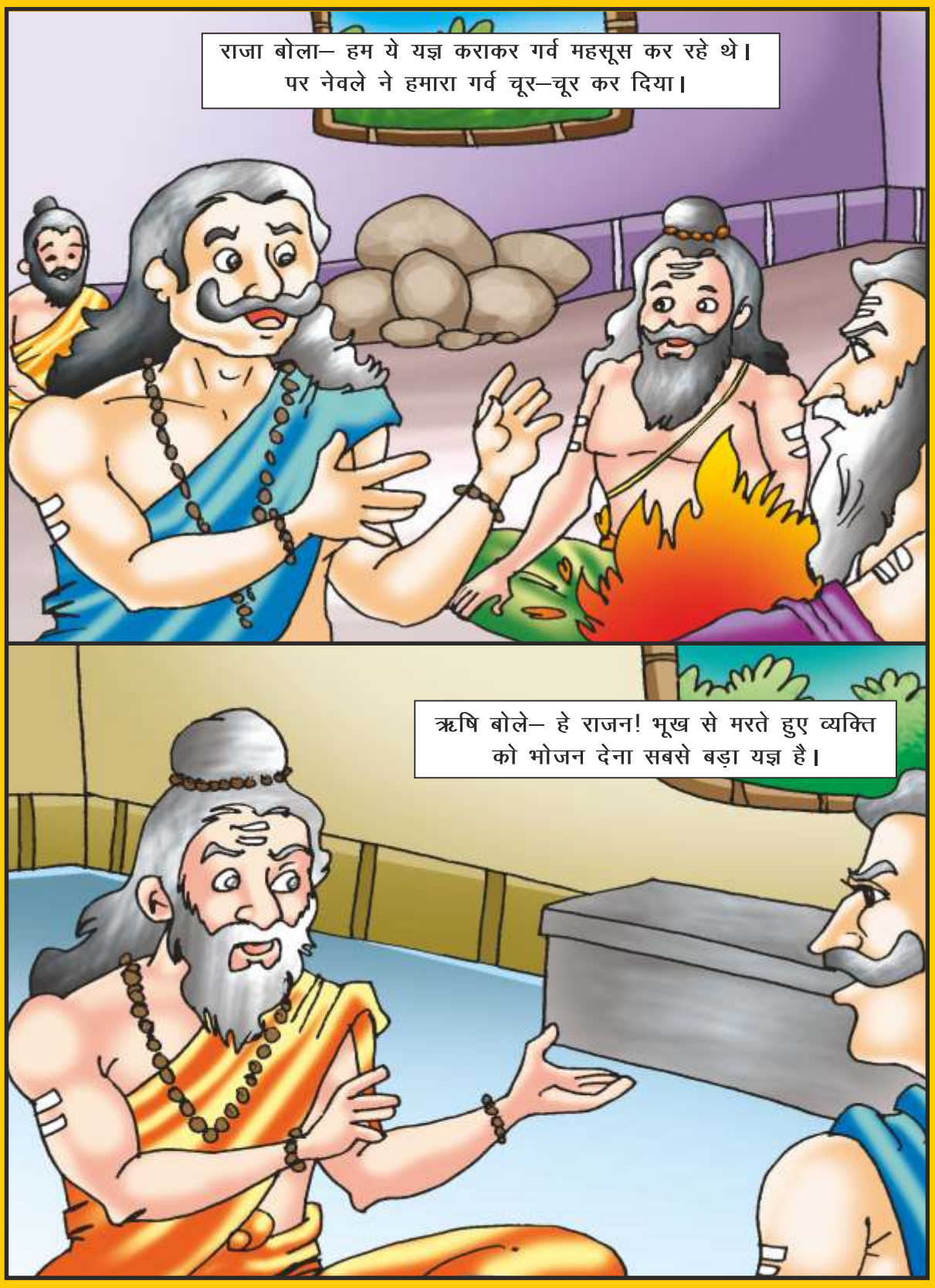
राजा बोला– हम ये यज्ञ कराकर गर्व महसूस कर रहे थे।
पर नेवले ने हमारा गर्व चूर–चूर कर दिया।
ऋषि बोले– हे राजन! भूख से मरते हुए व्यक्ति
को भोजन देना सबसे बड़ा यज्ञ है।

बाल कविता : रामअवध राम

आजादी हमने पाई है

बड़ी मुश्किलों से बच्चों,
आजादी हमने पाई है।
रखना संभाल कर इसको,
स्वतंत्रता सुखदाई है।

कितने ही वीरों ने इसके लिए,
अपनी जान गंवाई है।
उनकी ही कुर्बानी,
देखो आज रंग लाई है।

बापू सुभाष जवाहर के,
मेहनत की कमाई है।
नाम हमारे कर आजादी,
दुनिया से ली विदाई है।

प्रेरक–पसंग : सीताराम गुप्ता

आज़ादी

कन्नू एक दिन अचानक पापा से बोली कि मुझे तोता चाहिए। सबने उसे समझाया कि परिंदे आकाश में उड़ते हुए ही अच्छे लगते हैं। पक्षियों को भोजन से भी ज्यादा प्रिय आजादी होती है। कन्नू ने किसी की एक न सुनी।

कन्नू के पापा कहीं से एक तोता खरीद लाए जो लोहे के एक मज़बूत पिंजरे में बंद था। कन्नू तोते को देखकर चहकने लगी। कभी उसे पानी पिलाने का प्रयास करती तो कभी कुछ खिलाने का लेकिन तोता न तो कुछ खा रहा था और न पानी ही पी रहा था। वह अपने पंख फड़फड़ाने लगा और चोंच से तीलियों को काटने का प्रयास करने लगा जिससे उसकी चोंच लहूलुहान हो गई।

तोते की ये दशा देखकर कन्नू की आँखों में आँसू बहने लगे। कन्नू ने छत पर जाकर पिंजरे का दरवाज़ा खोल दिया। तोता आकाश की अनन्त ऊँचाइयों में विलीन हो गया। कन्नू ने तोते की ओर देखकर कहा, हो सके तो मुझे माफ कर देना। मुझे नहीं पता था कि तुम्हें भी हमारी तरह ही आज़ादी पसंद है। मैं वादा करती हूँ ''कि जीवन में कभी भी किसी पशु–पक्षी को पिंजरे में कैद नहीं करूँगी।''

समाचार

मंगलयान ने भेजी हेनरी क्रेटर की तस्वीर

नई दिल्ली। भारत के पहले अंतरग्रहीय मिशन 'मंगलयान' ने मंगल के सबसे बड़े गड्ढों में से एक हेनरी क्रेटर की तस्वीर भेजी है।

'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) ने ट्विटर पर तस्वीर जारी की है। हेनरी क्रेटर मंगल के अरब चतुष्कोण इलाके का सबसे बड़ा क्रेटर है और 10.9 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 336.7 डिग्री पश्चिम देशांतर पर स्थित है। इसका व्यास 171 किलोमीटर है और इसका नाम दूरबीन बनाने वाले फ्रांसीसी भाइयों पॉल पियरे हेनरी के नाम पर रखा गया है। हेनरी क्रेटर के बीचोबीच एक बड़ा टीला मौजूद है जिसके कुछ हिस्सों में कई परतें दिखायी दे रही हैं। मंगलयान पर लगे मार्स कलर कैमरे ने यह तस्वीर 5800 किमी की ऊँचाई से खींची। (वार्ता)

मंगल पर बहते पानी से भरा था गेल क्रेटर

वॉशिंगटन। लगभग 3.3 से 3.8 अरब साल पहले मंगल ग्रह पर मौजूद झरनों व झीलों ने गेल क्रेटर को तलछट से भरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यही परतें उस पहाड़ की बुनियाद बनी, जिसे माउथ शार्प कहा जाता है। एक भारतवंशी वैज्ञानिक ने यह खुलासा किया।

नासा के 'मार्स साइंस लेबोरेटरी' (एमएसएल) में परियोजना वैज्ञानिक अश्विन वसावडा ने कहा कि ऐसा लगता है कि अरबों साल पहले मंगल ग्रह पर व्यापक वायुमंडल था और एक सक्रिय जलमंडल भी था, जहाँ झीलों में पानी जमा होता था। 'एमएसएल' के दल ने कहा कि इसी जल ने गेल क्रेटर को भरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वसावडा के अनुसार 'क्यूरियोसिटी रोवर' के अवलोकन से पता चलता है कि वहाँ मौजूद उन झीलों व झरनों ने तलछट प्रदान करने का काम किया, जो धीरे–धीरे माउंट शार्प का निचले सतह के रूप में विकसित हुआ। मंगल ग्रह पर क्यूरियोसिटी रोवर के पहुँचने के पहले वैज्ञानिकों का विचार था कि गेल क्रेटर को तलछटों द्वारा भरा गया होगा। कुछ संकल्पनाओं के मुताबिक, ये तलछट हवा में मौजूद धूलकणों व बालू से जमा हुए, जबकि कुछ अन्य के मुताबिक, ये तलछट झीलों व झरनों से आए होंगे। हालिया शोध में यह बात पक्की हो गई है कि मंगल ग्रह पर मौजूद झरनों व झीलों ने गेल क्रेटर को तलछट से भरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यही परतें उस पहाड़ की बुनियाद भी बनीं। (भाषा)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

भारत में प्रथम

प्रस्तुति : ओमसिंह पंवार

★ प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल – वारेन हेस्टिंग्स
★ स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल – लार्ड माउंटबेटन
★ भारत के प्रथम मुख्य न्यायाधीश – हीरालाल जे. कानिया
★ स्वतंत्र भारत के प्रथम कमांडर इन चीफ – जनरल सर रॉय बुचर
★ प्रथम भारतीय थलसेना के सेनापति – के. एम. करिअप्पा
★ प्रथम वायु सेनाध्यक्ष – एयर मार्शल थॉमस एल्महर्स्ट
★ प्रथम नौसेनाध्यक्ष – वाइस एडमिरल आर. डी. कटारिया
★ प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री – स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा
★ प्रथम महिला बैरिस्टर – कोर्नेलिया सोराबजी
★ प्रथम महिला चिकित्सक – डॉ. कादम्बिनी गांगुली
★ भारतीय संघ के प्रथम गवर्नर जनरल – सी. राजगोपालाचारी
★ ऑस्कर प्राप्त प्रथम भारतीय – भानु अथैया
★ दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाले प्रथम भारतीय – कर्नल जतिन्दर कुमार बजाज
★ ओलम्पिक में पदक जीतने वाले प्रथम भारतीय – नॉर्मन प्रिचार्ड
★ प्रथम भारतीय आई.सी.एस. अधिकारी – सत्येन्द्रनाथ टेगोर
★ इंग्लिश चैनल को तैरकर पार करने वाले प्रथम भारतीय – मिहिर सेन
★ इंग्लिश चैनल को तैरकर पार करने वाली प्रथम भारतीय महिला – आरती साहा
★ प्रथम मैगसेसे अवार्ड पुरस्कार विजेता – आचार्य विनोबा भावे
★ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम भारतीय – डब्ल्यू.सी. बैनर्जी
★ प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता – रवीन्द्रनाथ टेगोर
★ भारत के प्रथम राष्ट्रपति – राजेन्द्र प्रसाद
★ भारत के प्रथम प्रधानमंत्री – जवाहरलाल नेहरु
★ भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री – सरदार वल्लभभाई पटेल
★ प्रथम भारतीय बोलती फिल्म – आलमआरा
★ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष – एनी बेसेन्ट
★ प्रथम महिला मंत्री – राजकुमारी अमृतकौर

खेल दिवस (29 अगस्त) पर विशेष

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

हॉकी का जादूगर

आओ बच्चों आज हम सभी,
ध्यानचन्द को जानें।
हॉकी के इस जादूगर को,
कविता से पहचानें।।

सन उन्नीस सौ पाँच देश ने,
एक रतन धन पाया।
जिसने हॉकी में भारत का,
जग में ध्वज फहराया।।

सेना का छोटा सा सैनिक,
दृढ़ इच्छाओं वाला।
कर न सका जो कोई अब तक,
ऐसा कुछ कर डाला।।

लेकर हॉकी गया जर्मनी,
आस्ट्रेलिया आया।
और पहुँच अमरीका उसने,
अपना खेल दिखाया।।

सारे जग में धूम मच गई,
ओलम्पिक भी जीते।
हॉकी वाले उसके आगे,
सारे पानी पीते।।

बर्लिन ओलम्पिक में उसको,
हिटलर ने पहचाना।
बोला सैनिक ध्यानचंद से,
पास हमारे आना।।

खेल तुम्हारा सबसे अच्छा,
अपना नाम बताओ।
फील्डमार्शल तुम्हें बनाऊँ,
तुम जर्मन आ जाओ।।

सारे जग में इसी तरह से,
उसने धूम मचायी।
तुम भी ऐसे बनो जहाँ में,
बात समझ में आयी।

तीन दिसम्बर सन उन्यासी,
को वह स्वर्ग सिधारा।
मैंने भी अपने कंधों का,
उसको दिया सहारा।।

ध्यानचंद का बच्चों से था,
अपनेपन का नाता।
जन्मदिवस उसका ही बच्चों,
खेल दिवस कहलाता।।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

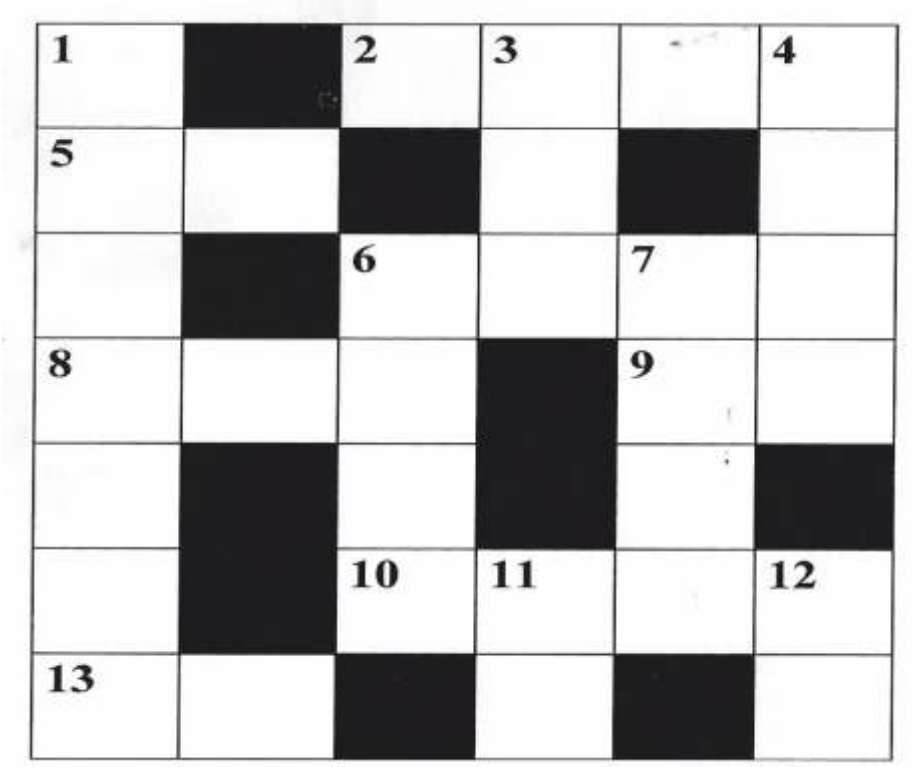

बाएं से दाएं →

2. भक्त हनुमान को ..... बली भी कहते हैं।
5. सारे ..... से अच्छा हिन्दोंस्तां हमारा।
6. सूती कपड़ा उद्योग के लिए प्रसिद्ध सूरत शहर जिस राज्य में है।
8. आकाश का विपरीत शब्द।
9. शुद्ध शब्द छांटिए : यग्य / यज्ञ।
10. माता सीता के ससुर।
13. इस वाक्य में छुपे एक जानवर को ढूंढिए : मंजरी छतरी ले आओ।

ऊपर से नीचे ↓

1. भारत के पहले गवर्नर जनरल चक्रवर्ती ..... थे।
3. पायलट हवाई ..... उड़ाता है।
4. पाइथागोरस एक प्रसिद्ध ..... थे (गणितज्ञ / वैज्ञानिक)।
6. गुलाब के फूल की पंखुड़ियों में चीनी मिलाकर बनाया जाने वाला एक पदार्थ।
7. इनमें से जो शहर छत्तीसगढ़ राज्य में है : अजमेर, पटियाला, रायपुर, जयपुर।
11. इंदिरा गाँधी की समाधि का नाम ..... स्थल है।
12. जमीन का एक पर्यायवाची शब्द।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

रक्षाबंधन पर विशेष कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

राखी का रंग

आजकल विवेक कुछ परेशान–सा रहता था। उसकी परेशानी की वजह यह थी कि उसका सहपाठी प्रतीक उसे तंग करता रहता था। प्रतीक दो बार फेल हो चुका था। वह विवेक से तीन वर्ष बड़ा था। केवल विवेक से ही नहीं बल्कि अपनी सारी कक्षा के छात्रों से भी बड़ा था। दोस्तों से उसकी तू–तू मैं–मैं होती ही रहती थी। कई छात्र उसकी शिकायत करने से डरते थे क्योंकि वे जानते थे कि छुट्टी के पश्चात वह उनके साथ लड़ाई–झगड़ा कर सकता था।

प्रतीक का न कोई भाई था और न ही बहन। वह इकलौता लड़का था। लाड़–प्यार से पला होने के कारण माता–पिता उसकी हर मांग पूरी करने की कोशिश करते थे। कई बार प्रतीक अपनी जिद्द से अनुचित मांगें भी मनवा लेता था। इसलिए उसका स्वभाव दिन–ब–दिन बिगड़ैल होता जा रहा था।

एक दिन विवेक ने अपनी दीदी अर्चना से प्रतीक के बारे में बताया। अर्चना प्रतीक से सात वर्ष बड़ी थी। उसने सोचा कि बुराई का मुकाबला बुराई से नहीं भलाई और स्नेह से ही किया जा सकता है। वह मौके की तलाश करने लगी।

एक दिन जब अर्चना अपनी साइकिल से बाजार से गुजर रही थी तो उसने देखा बाजार में प्रतीक बड़ी भयानक आवाज़ वाला हॉर्न बजाता हुआ बाइक पर तेजी से आ रहा था। जब वह अर्चना के पास से गुजरने लगा तो अर्चना ने तत्काल अवसर सम्भाला और उसे रूकने का संकेत दिया। प्रतीक की बाइक की गति इतनी तेज थी कि वह दूर जाकर ही धीमी हुई और फिर प्रतीक अपनी बाइक का 'यू टर्न' लेकर अर्चना के पास आ गया।

अर्चना ने उसे परसों सुबह अपने घर आने का न्यौता दिया। प्रतीक अर्चना को विवेक की दीदी होने के नाते जानता ही था। दूसरा, उसका घर भी पास वाले मौहल्ले में ही था।

प्रतीक को समझ नहीं आ रही थी कि अर्चना ने उसे परसों सुबह अपने घर आने का बुलावा क्यों दिया है?

रक्षाबंधन परसों ही तो था। बाजार में खूब चहल–पहल थी। बाजार भाँति–भाँति की सुन्दर राखियों से सजा हुआ था।

आखिर रक्षाबंधन की सुबह भी आ गई। सारा परिवार सुबह ही नहा–धोकर तैयार हो रहा था। अर्चना तैयार होकर कमरे को सजा रही थी। उसने राखी वाली थाली तो पहले से ही तैयार की हुई थी। कमरे में विवेक था और साथ ही एक पड़ोसी का लड़का जतिन। जतिन की भी कोई बहन नहीं थी। कमरे में धूप की सुगंधी फैल रही थी।

कुछ देर में अर्चना की मम्मी भी उनके पास कमरे में आकर बैठ गई। इससे पहले कि राखी बांधने का शगुन आरम्भ होता, मम्मी सब बच्चों को रक्षाबंधन से जुड़ी कोई पुरानी कथा सुनाने लगी। लेकिन तभी अचानक घर की घंटी बजी। अर्चना ने दरवाजा खोला तो देखा सामने एक लड़का खड़ा था। शक्ल–सूरत से लगता था जैसे कई दिनों से नहीं नहाया। मैले–कुचैले कपड़े। गेट के पास ही उसकी बाइक भी खड़ी थी। वह प्रतीक ही था।

''आओ प्रतीक। तुम्हारा स्वागत है।'' अर्चना ने प्रतीक को अन्दर आने को कहा।

प्रतीक भी उसी कमरे में आकर एक सोफे पर बैठ गया। वह विवेक और जतिन से मिला। अर्चना ने पहले प्रतीक को पानी पीने के लिए दिया और फिर एक प्लेट में पड़े केले उसके आगे कर दिए। अर्चना की मम्मी उन्हें कहानी सुनाने लगीं कि एक बार इंद्र देवता दैत्यों के राजा से युद्ध कर रहे थे और उनके सारे वार बेकार हो रहे थे। तब सभी देवता गुरु बृहस्पति के पास गये और उनकी सलाह ली। उनकी सलाह के अनुसार श्रावण पूर्णिमा के दिन इंद्राणी ने इंद्र की रक्षा हेतु उनकी कलाई पर रेशम का धागा बांध दिया जिसे राखी के नाम से जाना गया। राखी बंधवाने के बाद इंद्र में इतना आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय पैदा हो गया कि उसने दैत्यों के राजा को मुँह की खाने के लिए मजबूर कर दिया। बाद में यही परंपरा एक त्योहार के रूप में परिवर्तित हो गई और भाई–बहन के आपसी स्नेह का प्रतीक बन गया। इस दिन सभी भाई अपनी बहनों से राखी बंधवाते हैं। तुम जानते ही हो कि रक्षाबंधन का त्योहार भाई–बहन के अटूट बंधन और प्यार को दर्शाता है।

तभी प्रतीक एकदम बोल उठा, ''लेकिन मेरी तो कोई बहन ही नहीं.... ।''

अर्चना ने प्रतीक का हाथ पकड़ा और बड़े प्यार से बोली, ''प्रतीक, मुझे इस बात का पता है। मैंने तुम्हें राखी बांधने के लिए ही बुलाया है।''

न जाने अर्चना के शब्दों और उसकी स्नेह भरी पकड़ में ऐसा क्या जादू था कि प्रतीक का सर झुक गया। उसकी आंखों में आंसू टपक पड़े। फिर उसे पता नहीं क्या सूझा, वह तत्काल घर से बाहर हो गया।

अर्चना और अन्य सदस्य हैरान परेशान थे कि अचानक उसे क्या हो गया और वह एकदम क्यों चला गया है। खैर..... ।

अर्चना, विवेक और जतिन को राखी बांधने लगी। अचानक फिर दरवाजे की घंटी बजी।

अर्चना ने देखा तो हैरान रह गई। एक नहाया–धोया और साफ–सुथरे वस्त्र पहने लड़का हाथ में एक डिब्बा लिए खड़ा था। अपने बालों को सुन्दर ढंग से कंघी भी करके आया था। वह प्रतीक ही था।

''अरे प्रतीक तुम? तुम कहाँ चले गये थे?'' अर्चना ने पूछा।

''दीदी, मैं तीन दिनों से नहाया नहीं था। आपके प्यार भरे शब्दों ने मेरी आंखें खोल दी हैं। आज मुझे सचमुच अहसास हो गया है कि जिस घर में बहन नहीं, उस घर के भाइयों के लिए रक्षाबंधन का त्योहार अधूरा है। लेकिन आज से मेरी कलाई भी खाली नहीं रहा करेगी क्योंकि मुझे भी एक दीदी मिल गई है।''

अर्चना ने तीनों को राखी बांधी। जब प्रतीक दीदी को उपहार देने लगा तो अर्चना ने एकदम मना कर दिया। बोली, ''प्रतीक, मुझे इस उपहार की जरूरत नहीं। तुम्हारा स्नेह ही मेरे लिए बहुत कुछ है। हाँ, तुम्हारा एक वादा ही मेरे लिए किसी बड़े और महंगे उपहार से कम नहीं होगा।''

''बोलो दीदी, मैं आप से हर वादा निभाने के लिए तैयार हूँ।''

''मैं जानती हूँ कि तुम्हें स्कूल में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। आज से किसी से लड़ना–झगड़ना बंद कर दो। किसी का दिल मत दुखाओ। फिर देखना तुम्हारी सारी परेशानियां खुद–ब–खुद दूर हो जाएंगी। मेरा छोटा भाई विवेक भी एक अच्छा लड़का बने, मेरी यही कामना है।''

''दीदी, आज से तुम विवेक और जतिन की दीदी ही नहीं मेरी भी दीदी हो। अब आगे से वैसा ही होगा जैसा आप कह रही हैं।''

प्रतीक ने यह बात की तो अर्चना बोली, ''शाबाश प्रतीक। मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। चलो अब नाश्ता करो।''

अब सारा परिवार मिलजुलकर नाश्ता कर रहा था। टी.वी. पर रक्षाबंधन के गीतों के मीठे–मीठे स्वर गूंज रहे थे।

आलेख : मीना

मस्तिष्क : दिलचस्प जानकारी

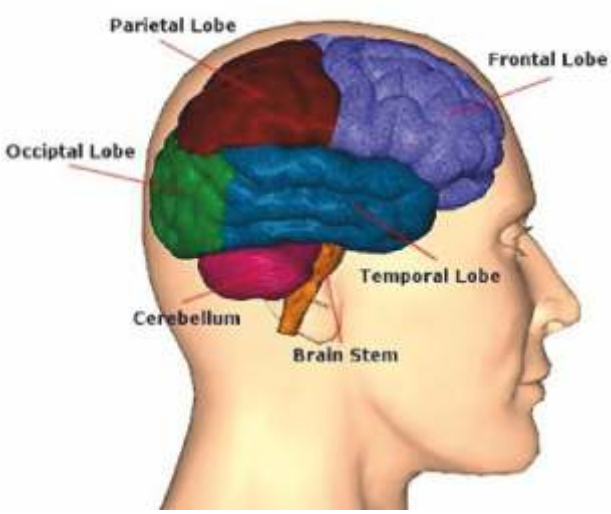

मस्तिष्क शरीर का केन्द्रीय कक्ष है। यह शरीर के उद्देश्यपूर्ण क्रियाकलापों को निर्विध्न और प्रभावी तरीके से निर्देशित, नियंत्रित और नियमित करता है।

तंत्रिकाओं के जाल के माध्यम से मस्तिष्क द्वारा सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। तंत्रिका तंतुओं से संदेश का विद्युत–रासायनिक बहुत तेजी से होता है। ये संदेश 100 मीटर प्रति सेकिण्ड की गति से प्रसारित होते रहते हैं।

पंजों से लेकर मस्तिष्क तक चुभन का कोई संदेश 1/50 सेकिण्ड में पहुँच सकता है। ऐसा संदेश मिलते ही मस्तिष्क कई जटिल संदेश प्रेषित करता है और पैर को वहाँ से हटा लेने या हाथ से सहलाने का आदेश प्रेषित करता है।

तंत्रिकाएं दो प्रकार की होती हैं। संवेदी तंत्रिकाएं अंगों से संदेश मस्तिष्क तक लाती हैं जबकि प्रेरक तंत्रिकाएं मस्तिष्क के आदेशों को उन मांसपेशियों तक ले जाती हैं जो अंगों के संचालन के लिए उत्तरदायी हैं।

मस्तिष्क और रीढ़ रज्जु मिलकर केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र बनाते हैं। कुछ तंत्रिकाएं अंगों व मस्तिष्क के बीच में सीधी जुड़ी होती हैं, किन्तु अधिकांश रीढ़ रज्जु के माध्यम से मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं।

मेरूरज्जु संदेशों के सीधे व त्वरित आवागमन के लिए सड़क जैसा कार्य करता है। यह कुछ ऐसी क्रियाओं को भी नियंत्रित कर सकता है, जिनमें मस्तिष्क का जरा भी उपयोग नहीं होता है।

अगर आप किसी गर्म बर्तन को छुएं तो संवेदी तंत्रिकाओं द्वारा मस्तिष्क को संदेश भेजा जाता है। मस्तिष्क प्रेरक तंत्रिकाओं के द्वारा मांसपेशियों को हाथ खींच लेने का संदेश देता है। किन्तु अगर बर्तन ज्यादा गर्म है तो मस्तिष्क तक मूल संदेश पहुँचने से पहले ही रीढ़ रज्जु के द्वारा पेशियों को संदेश पहुँचा दिया जाता है कि हाथ फौरन हटा लिया जाए।

मस्तिष्क का 70 प्रतिशत भाग सेरेब्रम द्वारा बनता है, जो दो गोलार्द्धों का बना होता है। दायां गोलार्द्ध शरीर के बाएं भाग से एवं बायां गोलार्द्ध दाएं भाग से सम्बन्धित होता है।

बायां गोलार्द्ध वाणी, लेखन, गणितीय योग्यता और तार्किक आचरण को नियंत्रित करता है। किन्तु दायां भाग ही किसी को त्रिविमिय निर्णयों से सक्षम बनाता है। यह व्यक्ति के बौद्धिक और कलात्मक विकास के लिए भी उत्तरदायी होता है। दायां भाग रचनात्मक भाग है जो तस्वीरों और रंगों में सोचता है और संगीत व गीतों को याद रखता है। यह बाएं भाग की भांति तार्किक ढंग से सोचने के स्थान पर सहज बोध–विधि से सोचता है।

कार्य करने के लिए मस्तिष्क को अधिक ऊर्जा की जरूरत होती है। यद्यपि शरीर के कुल भार की तुलना में मस्तिष्क का वजन मात्र 2.5 प्रतिशत होता है, किन्तु यहाँ शरीर में उत्पन्न कुल ऊर्जा का 1/5 भाग उपयोग लिया जाता है।

ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में मस्तिष्क कोशिकाओं को जल्दी ही हानि पहुँचती है और वे दुबारा ठीक नहीं हो सकती। लगभग पांच मिनट ऑक्सीजन नहीं मिलने पर ही समूचा मस्तिष्क ही मृत हो जाता है।

उम्र के बढ़ते जाने पर हजारों मस्तिष्क कोशिकाएं रोजाना मरती जाती हैं और दुबारा जीवित नहीं होती। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे मस्तिष्क में लाखों कोशिकाएं होती हैं।

वयस्क व्यक्ति के मस्तिष्क का वजन लगभग 1.4 किलोग्राम होता है। यद्यपि महिलाओं का मस्तिष्क पुरुषों की तुलना में तनिक छोटा होता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उनमें पुरुषों की अपेक्षा कम बुद्धि होती है।

हमारे शरीर में ऊष्मा का सबसे अधिक उत्सर्जन त्वचा द्वारा नहीं बल्कि सिर द्वारा होता है। शरीर की 80 प्रतिशत ऊष्मा का उत्सर्जन सिर द्वारा ही होता है।

दिमाग के चारों तरफ एक झिल्ली होती है जिसमें संवेदी कोशिकाओं का जाल बिछा होता है। परन्तु दिमाग में स्वयं कोई संवेदन नहीं होता। अगर इसे दो टुकड़ों में काट दिया जाए तो व्यक्ति को दर्द का अहसास नहीं होता।

प्रेरक–प्रसंग : रूपनारायण काबरा

मातृभूमि प्रेम

जापान का एक चित्रकार भगवान बुद्ध के जीवन के अनूठे प्रसंगों को अपनी तूलिका से चित्रित करने के उद्देश्य से सारनाथ आया हुआ था। वह बुद्ध के प्रसंगों को दीवारों पर अंकित करने के कार्य में दिन–भर मनोयोग से जुटा रहता। रात के समय बटलोई में कुछ चावल, दाल और आलू डालकर अपने लिये खिचड़ी बना लेता।

एक दिन एक बौद्ध भिक्षु ने उसे एक डिब्बे में से चावल के कुछ दाने निकालकर बाकी चावलों में मिलाते हुए देखा। उसने पूछा, 'क्या चावल के इन दानों में कोई विशेषता है जो तुमने डिब्बे में से निकालकर मिलाये?'

चित्रकार ने उत्तर दिया, 'बंधु, चावल के ये दाने मेरे देश जापान के हैं, वहाँ उपजे हैं। मैं इन्हें मातृभूमि का पवित्र प्रसाद मानकर प्रतिदिन अपने भोजन में मिला लेता हूँ। इस माध्यम से मैं अपनी मातृभूमि से जुड़ा महसूस करता हूँ।

बौद्ध भिक्षु जापानी चित्रकार का मातृभूमि प्रेम देखकर चकित रह गया।

प्रस्तुति : जगतार 'चमन'

पहेलियां

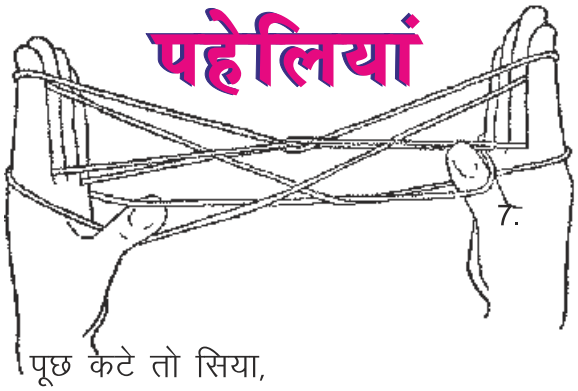

1. पूछ कटे तो सिया,
सिर कटे तो मित्र।
मध्य कटे तो खोपड़ी,
पहेली यह विचित्र।।

2. छोटे ताल में मछली एक,
बिन उसके तू कुछ न देख।
जब मछली गुस्से में आए,
ताल का सारा जल पी जाए।।

3. एक महल में रस भरा,
देख उसे मैं तो डरा।
खाए तो भी कैसे खाए,
द्वार–द्वार पर लगा पहरा।।

4. एक थाल मोतियों से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उससे एक न गिरे।।

5. एक दोस्त बड़ा शैतान,
चढ़े नाक पर पकड़े कान।

6. कद लंबा और रूप गोल है,
आए काम जब आती रात।
रोती जलती खड़ी–खड़ी,
कभी न पूछे कोई बात।।

7. ऊपर से नीचे बहता हूँ,
हर बर्तन को अपनाता हूँ।
देखो मुझको गिरा न देना,
वरना कठिन हो जाएगा भरना।।

8. आकाश में उड़े रात दिन,
मगर वह नहीं विहग।
बैठ दूर घूमें कितने,
कितने देख कर दंग।।

9. मुझमें भार सदा ही रहता,
जगह घेरना मुझको आता।
वह वस्तु से गहरा रिश्ता,
हर जगह मैं पाया जाता।।

10. सर के नीचे दबा रहे,
लेकिन चूं तक न करता है।
बच्चों, बोलो कौन है वो,
जो साथ तुम्हारे सोता है।।

11. हरा डिब्बा पीला मकान,
उसमें बैठे कल्लू राम।

12. उस राजा की अनोखी रानी,
दुम के रास्ते पीती पानी।

13. एक डिब्बे में बत्तीस दाने,
बूझने वाले बड़े सयाने।

14. देखने में हूँ गाठ–गठीला,
खाने में हूँ खूब रसीला।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कहानी : मनोहर चमोली 'मनु'

तरीका अच्छी पढ़ाई का

''**आ** गए बेटा। रिजल्ट कैसा रहा?'' मारिया ने लुईस से पूछा।

लुईस जोर–जोर से रोने लगा। उसने अपना रिपोर्ट कार्ड बिस्तर पर फेंक दिया। मारिया ने रिपोर्ट कार्ड ध्यान से देखा। मारिया मुस्कुराते हुए लुईस से बोली– ''अरे वाह! तुम्हें तो हर सब्जेक्ट में 'ए' ग्रेड मिला है। तुम तो फर्स्ट डिवीजन से पास हुए हो। फिर रो क्यों रहे हो?''

लुईस ने सुबकते हुए मारिया से कहा– ''मम्मी। गुलबेग ने फिर से टॉप किया है। उसके हर सब्जेक्ट में 'नाइंटी' से अधिक मार्क्स हैं। हम दोनों एक ही क्लास में हैं। मैं एक भी पीरियड मिस नहीं करता। ट्यूशन भी लिया है। फिर भी हर बार मेरे मार्क्स गुलबेग से कम क्यों आते हैं?''

मारिया ने लुईस को प्यार से समझाते हुए कहा– ''बेटा। ऐसा नहीं सोचते। मैं जानती हूँ कि मेरा लुईस पूरी लगन और मेहनत से पढ़ाई करता है। रही बात गुलबेग की तो हो सकता है कि वह ज्यादा मार्क्स लाने के लिए और अधिक मेहनत करता होगा। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि तुम निराश हो जाओ। हर कोई तो अव्वल नहीं आएगा न। लेकिन अव्वल आने के लिए किसने कितना प्रयास किया, ये ज्यादा महत्वपूर्ण है।''

लुईस ने पूछा– ''मतलब?'' मारिया ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया– ''मतलब ये कि सबसे पहले हमारा लुईस गाजर का हलुवा खाएगा। उसके बाद हम दोनों गुलबेग को बधाई देने उसके घर जाएंगे। हम यह भी जानेंगे कि आखिर वह टॉप आने के लिए क्या–क्या करता है। ताकि तुम भी और अच्छा प्रदर्शन कर सको।''

''ठीक है मम्मी। मैं पहले मुँह–हाथ धोकर आता हूँ।'' लुईस ने कहा। लुईस ने गाजर का हलुवा खाया। फिर लुईस अपनी मम्मी मारिया के साथ गुलबेग के घर पहुँच गया। लुईस ने गुलबेग को गले लगाते हुए कहा– ''यार। एक बार फिर बधाई। देखो तुम्हारे लिए मैं गाजर का हलुवा लाया हूँ। मम्मी ने बड़े प्यार से बनाया है।''

गुलबेग ने कहा– ''थैंक्यू लुईस। थैंक्स आंटी। आइए। बैठिए। मम्मी–पापा तो शॉपिंग के लिए गये हुए हैं।''

मारिया ने कहा– ''कोई बात नहीं बेटा। तब तक हम बैठकर बातचीत करते हैं। दरअसल, लुईस के साथ–साथ मैं भी जानना चाहती हूँ कि तुम पढ़ाई के लिए क्या खास योजना बनाते हो। बताना चाहोगे?''

गुलबेग ने बैठते हुए कहा– ''क्यों नहीं आंटी। वैसे मैं कुछ खास तैयारी तो नहीं करता। लेकिन नई क्लास में पहले ही दिन से हर पीरियड को 'ज्वाइन' करता हूँ। कक्षा में कभी भी सेल फोन नहीं ले जाता। घर आकर सबसे पहले होमवर्क निपटाता हूँ। स्कूल में जो कुछ भी पढ़ाया जाता है उसका घर आकर जरूर से रिवीजन कर लेता हूँ। तब जाकर खेलता हूँ। हाँ। सोने से पहले मैं कल जो पढ़ाया जाने वाला है, उस पाठ को खुद ही समझने की कोशिश करता हूँ।

लुईस ने कहा– ''अरे वाह! यह तो बड़ा अच्छा तरीका है।''

गुलबेग बोला– ''बिल्कुल। शुरू–शुरू में थोड़ी दिक्कत होती है। लेकिन फिर मजा आने लगता है। अब तो मैं ये कल्पना तक करने लग जाता हूँ कि पढ़ाया जाने वाला पाठ टीचर शायद ऐसा पढ़ायेंगे। कभी–कभी मेरा अनुमान बिल्कुल सही भी निकल जाता है। आंटी, मैं सुबह अच्छा नाश्ता करता हूँ। टिफिन ले जाना कभी नही भूलता पानी भी खूब पीता हूँ। इससे दिनभर मुझे आलस नहीं आता। ध्यान भी नहीं बंटता।''

लुईस की मम्मी मारिया ने कहा– ''सुना बेटा लुईस। मैं कहती थी न कि नाश्ता करके ही स्कूल जाओ। तुम कई बार यह कहकर स्कूल चले जाते हो न कि मम्मी भूख नहीं है। स्कूल में खा लूंगा।'' यह सुनकर लुईस चुप रहा।

गुलबेग ने कहा– आंटी, छुट्टी के दिन खूब खेलता हूँ। लेकिन बीच–बीच में आधा घंटा पढ़ाई भी करता हूँ। छुट्टी के दिन मेरा पहला काम होता है कि मै हर सब्जेक्ट में पढ़ाये जा चुके पाठों का रिवीजन कर लूँ। मम्मी–पापा भी छुट्टी के दिन मुझसे मेरी 'बुक्स' से सवाल पूछते हैं। जिन सवालों का जवाब मैं नहीं दे पाता, उनका फिर से अभ्यास करता हूँ।''

मारिया ने कहा– ''गुड। ये अच्छा तरीका है। अब मैं भी ऐसा ही करूंगी। लुईस तुम तैयार हो न?''

लुईस ने कहा– ''हाँ मम्मी। इससे मेरा 'रिवीजन' ही तो होगा। मैं तैयार हूँ।

गुलबेग ने कहा– ''और हाँ। लुईस, आज ही हमारा रिजल्ट आउट हुआ है। मैंने आज ही सीनियर्स से प्रश्न–पत्र लिए हैं। इससे मुझे नई क्लास के प्रश्न का 'पैटर्न' पता चल जाएगा। तुम भी किसी सीनियर्स से हर सब्जेक्ट के पेपर ले लेना। नहीं तो मैं फोटोस्टेट करवा कर तुम्हें दे दूंगा। मैं एक काम हर बार करता हूँ। वो है क्लास में नोट्स बनाना। टीचर की हर बात ध्यान से सुनता हूँ और जिस बात पर वे ज्यादा जोर देते हैं उसे झट से नोट कर लेता हूँ। पढ़ाते–पढ़ाते ही टीचर्स कई बार बता देते हैं कि ये प्रश्न महत्वपूर्ण है। बस उसे परीक्षा के समय जरूर याद करता हूँ।''

लुईस ने कहा– ''थैंक्स यार। पढ़ाई तो मैं भी खूब करता हूँ। लेकिन ऐसी प्लानिंग मैंने कभी नहीं की। अब से मैं भी पढ़ाई पूरी प्लानिंग से करूंगा।''

इतना कहकर लुईस ने घर जाने की इजाजत मांगी।

प्यारा भारत देश हमारा

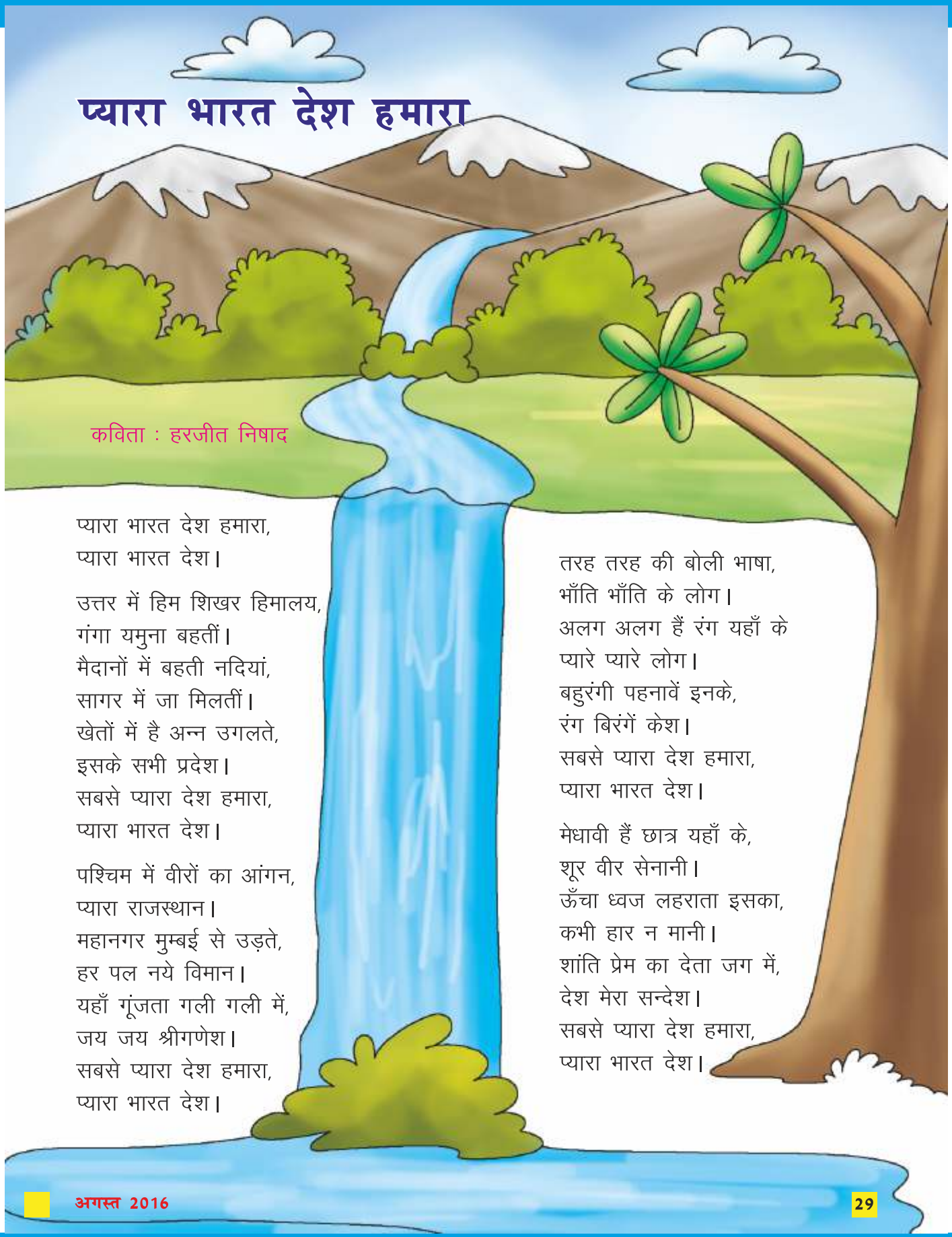

कविता : हरजीत निषाद

प्यारा भारत देश हमारा,
प्यारा भारत देश।

उत्तर में हिम शिखर हिमालय,
गंगा यमुना बहतीं।
मैदानों में बहती नदियां,
सागर में जा मिलतीं।
खेतों में है अन्न उगलते,
इसके सभी प्रदेश।
सबसे प्यारा देश हमारा,
प्यारा भारत देश।

पश्चिम में वीरों का आंगन,
प्यारा राजस्थान।
महानगर मुम्बई से उड़ते,
हर पल नये विमान।
यहाँ गूंजता गली गली में,
जय जय श्रीगणेश।
सबसे प्यारा देश हमारा,
प्यारा भारत देश।

तरह तरह की बोली भाषा,
भाँति भाँति के लोग।
अलग अलग हैं रंग यहाँ के
प्यारे प्यारे लोग।
बहुरंगी पहनावें इनके,
रंग बिरंगें केश।
सबसे प्यारा देश हमारा,
प्यारा भारत देश।

मेधावी हैं छात्र यहाँ के,
शूर वीर सेनानी।
ऊँचा ध्वज लहराता इसका,
कभी हार न मानी।
शांति प्रेम का देता जग में,
देश मेरा सन्देश।
सबसे प्यारा देश हमारा,
प्यारा भारत देश।

जानकारी : विद्या प्रकाश

क्या होती है विश्व धरोहर

विश्व धरोहर किसी देश की संस्कृति तथा इतिहास से जुड़े स्थल होते हैं। इनमें वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक तथा भवन सम्मिलित होते हैं। विश्व विरासत स्थल समिति द्वारा इन स्थलों का चयन किया जाता है। यह समिति यूनेस्को के तत्वावधान में हमारी प्राचीन विरासतों तथा ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण करती है। वर्तमान काल में 936 विश्व विरासत हैं। जिनमें 725 सांस्कृतिक, 183 प्राकृतिक तथा 28 अन्य हैं। भारत में कुल 32 विश्व धरोहर हैं जिनमें 25 सांस्कृतिक तथा 7 प्राकृतिक हैं।

किसी स्थल को विश्व धरोहर के रूप में चयनित करने के लिए निश्चित चयन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। किसी देश को सर्वप्रथम सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक हिसाब से उन स्थलों की सूची बनानी होती है जिनका नाम वह विश्व विरासत में दर्ज कराना चाहता है। इसे परीक्षण–सूची कहा जाता है। तत्पश्चात् इस सूची का मूल्यांकन अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद् तथा विश्व संरक्षण द्वारा किया जाता है। दोनों संस्थायें विश्व विरासत समिति को अपनी सिफारिश प्रेषित करती हैं। इस समिति की सालभर में एक बार बैठक होती है जिसमें निर्धारित मापदण्डों के अनुसार विश्व धरोहर के रूप में किसी स्थान या स्मारक का चयन किया जाता है।

समिति का किसी स्मारक या स्थान को विश्व धरोहर के रूप में चुनने के लिए अपना मापदण्ड

होता है। रचना ऐसी हो जो मानवनिर्मित हो तथा उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करे। रचना मानवीय मूल्यों को दर्शाने वाली हो। ऐसी कृति हो जो

मानव की किसी ऐसी संस्कृति तथा सभ्यता की परिचायिका हो जो वर्तमान में नहीं है। कोई ऐतिहासिक इमारत हो जो वास्तुशास्त्र तथा तकनीक की मिसाल हो। ऐसा कोई बेहतरीन नमूना हो जिसका मानव की ऐतिहासिक परम्परा के साथ पर्यावरण से सम्बन्ध हो तथा जो कला और साहित्य का परिचायक हो।

किसी देश की विरासत उसकी पहचान होती है। दिल्ली के जंतर–मंतर के आसपास ऊँची इमारतों के कारण इसकी सूर्य घड़ी यंत्रों को सूर्य का प्रकाश मिलना बन्द हो गया। लिहाजा वे बेकार हो गये। हाल में ही दिल्ली सरकार तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का इसे यूनेस्को की साझा विश्वविरासत में शामिल करने का दावा इसी आधार पर खारिज कर दिया गया।

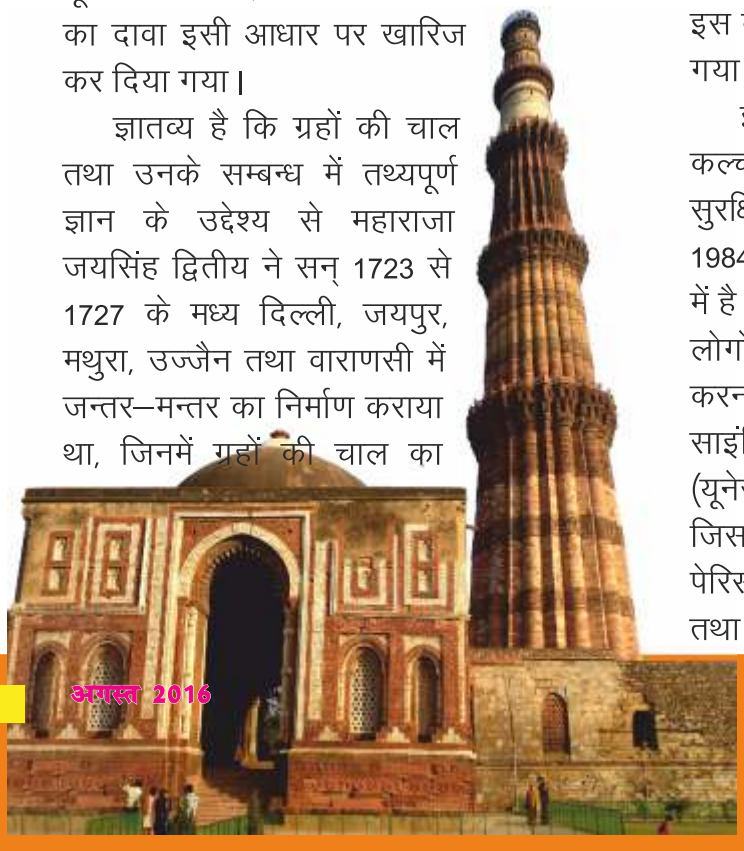

ज्ञातव्य है कि ग्रहों की चाल तथा उनके सम्बन्ध में तथ्यपूर्ण ज्ञान के उद्देश्य से महाराजा जयसिंह द्वितीय ने सन् 1723 से 1727 के मध्य दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन तथा वाराणसी में जन्तर–मन्तर का निर्माण कराया था, जिनमें ग्रहों की चाल का निर्धारण करने हेतु अनेक यंत्र लगाये गये। इन 13 खगोलीय यंत्रों में सम्राट यंत्र, जय प्रकाश यंत्र तथा मिश्र यंत्र प्रमुख हैं। जन्तर का अर्थ होता है यंत्र तथा मन्तर का अर्थ होता है गणना करना। इस कारण इनका नामकरण जन्तर–मन्तर किया गया।

इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चर हेरिटेज (इनटेक) भारतीय धरोहरों को सुरक्षित रखने वाली गैर सरकारी संस्था है। सन् 1984 में स्थापित इस संस्था का कार्यालय दिल्ली में है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन धरोहरों के प्रति लोगों में जागरुकता लाना तथा उनका संरक्षण करना है। यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की स्थापना सन् 1945 में हुई थी। जिसका मुख्य कार्यालय फ्रांस की राजधानी पेरिस में है। इसका मुख्य उद्देश्य मानवधिकारों तथा संस्कृति की रक्षा करना है।

प्रस्तुति : अजय डिमरी

देखो और खोजो

आर्किमीडीज के सिद्धान्त ने ही तो जहाज को पानी पर तैराया था,
न्यूटन ने ही सेब के गिरने का सिद्धान्त बताया था,
चार्ल्स बैवेज ने ही तो कम्प्यूटर से संचार क्रांति चलायी थी।
हवाई जहाज को राइट ब्रदर्स भाईयों ने ही तो उड़ाया था।
ग्रहों के घूमने का चक्कर कैपलर ने ही तो चलाया था।
जूल ने ही तो कार्य करने के लिए ऊर्जा को बतलाया था।
मोल संकल्पना की सोच आवागाद्रो के दिमाग में आयी थी।
इलैक्ट्रान की खोज से ही तो टामसन ने तहलका मचाया था।
रदरफोर्ड की प्रोट्रॉन खोज एक मार्मिक कहानी थी।
स्टासबर्गर की गुणसूत्र खोज डी.एन.ए. टैस्ट में काम आयी थी।
न्यूट्रान से चैडविक का बम्बार्डमेंट एक अजीब सी घटना थी।
राबर्ट हुक का कोशिका ढूँढना एक अजीब सा सपना था।
ल्यूवेन हॉक ने सूक्ष्मदर्शी से छोटे जीवों को ढूँढ निकाला था,
जड़त्व का नियम गैलीलियो ने ही तो समझाया था,
कोशिका में केन्द्रक को देखो राबर्ट ब्राउन ने बतलाया था।

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

इस तरह बना रेनकोट

मानव सभ्यता की शुरूआत से बारिश से ही बचाव के लिए अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं। मगर दुनिया का सर्वप्रथम वाटरप्रूफ रेनकोट सन् 1823 में ही बन सका। इसका आविष्कार चार्ल्स मैकिटोश ने किया था तथा यही वजह है कि दुनिया के अनेक हिस्सों में रेनकोट को मैक के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने सूती कपड़ों की दो परतों के मध्य रबर की परत डालकर वाटरप्रूफ कपड़ा तैयार किया। रेनकोट के इसी नमूने पर काम करते हुए ड्यूपाट कम्पनी ने आधुनिक रेनकोट तैयार किया जिसमें सूती कपड़ों के स्थान पर प्लास्टिक अथवा नायलॉन का इस्तेमाल किया जाने लगा।

स्कॉटलैंड में इतनी अधिक मात्रा में बारिश होती है कि पहाड़ियों पर निवास करने वाले किसान अपनी भेड़ों को मौसमी दुष्प्रभाव से बचाने के लिए रेनकोट पहनाकर रखते हैं।

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

★ सुन्दर भावनाओं के कारण ही इन्सान का मयार ऊँचा होता है।

★ युग तो बदलते हैं पर सन्तों की भावनाएं नहीं बदलती।

★ इंसान धरती के लिए गौरव का कारण बने न कि अभिशाप का।

★ आँखें बन्द करके चलने से रोशनी में भी ठोकरें लगेंगी।

★ यदि जाग्रति और अनुभूति नहीं तो शान्ति और सुकून भी नहीं।

★ सभी के साथ अपनेपन की भावना से युक्त व्यवहार करो।

★ नफरत किसी से नहीं सब से प्यार करो।

— बाबा हरदेव सिंह जी

★ यदि आप प्यार का बीज डालेंगे तो प्यार मिलेगा। यदि नफरत का बीज बोयेंगे तो नफरत मिलेगी। — बाबा अवतार सिंह जी

★ नम्रता दिखाते समय हम महान व्यक्तियों के समकक्ष हो जाते हैं। — रवीन्द्रनाथ ठाकुर

★ हम शिकायत कर सकते हैं कि गुलाब के पौधे में कांटे हैं या खुशी प्रकट कर सकते हैं कि कांटो के पौधे में भी फूल हैं।

★ जो लोग दूसरों को आजादी नहीं देते, उन्हें खुद भी इसका हक नहीं होता।

— अब्राहम लिंकन

★ सफलता की कुंजी बेहद आसान है। सही काम, सही ढंग से सही वक्त पर करें।

— अर्नोल्ड एच. ग्लासगो

★ आशा उत्साह की जननी है। इसमें तेज, बल और जीवन है। आशा संसार की संचालक शक्ति है। — प्रेमचन्द

★ इस दुनिया में जो कुछ हम अर्जित करते हैं उससे नहीं बल्कि जो कुछ त्याग करते हैं, उससे समृद्ध बनते हैं। — हेनरी वार्ड बीचर

★ सच को हजारों तरीकों से कहा जा सकता है। लेकिन उनमें से हर एक आखिरकार सच ही होता है।

— स्वामी विवेकानन्द

★ सफलता की खुशी मानना अच्छा है, पर उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना। — बिल गेट्स

★ आपकी वजह से किसी एक व्यक्ति की जिंदगी भी आसान हुई तो वह सफलता है।

— एमर्सन

★ गुणवता कोई अचानक प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं है। यह तो हमेशा से समझदारी से किए गए प्रयासों का परिणाम है।

— आर्नोल्ड पामर

★ विफलता वह मौका है जब आप अपनी योग्यता को अधिक बुद्धिमानी से परख सकते हैं।

★ गलतियां नहीं समाधान ढूंढे।

— हेनरी फोर्ड

किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
हुर्रे हुर्रे।
बल्ले बल्ले।
रक्षाबंधन आने वाला है। टीना तुम अपने भाई से रक्षाबन्धन पर क्या लोगी।

मैं अपने भाई से एक सुन्दर सा सूट लूंगी।
अरे किट्टी तुम आ गई।
हाँ माँ।
क्या बात है किट्टी, आज तुम उदास क्यों हो?
कुछ नहीं माँ।

किट्टी तुम कुछ दिनों से उदास क्यों हो?
लड्डू, मेरा कोई भाई नहीं है। मैं किसको राखी बाँधूगी।
किट्टी तुम उदास मत हो। मैं तुमसे राखी बंधवाऊँगा।

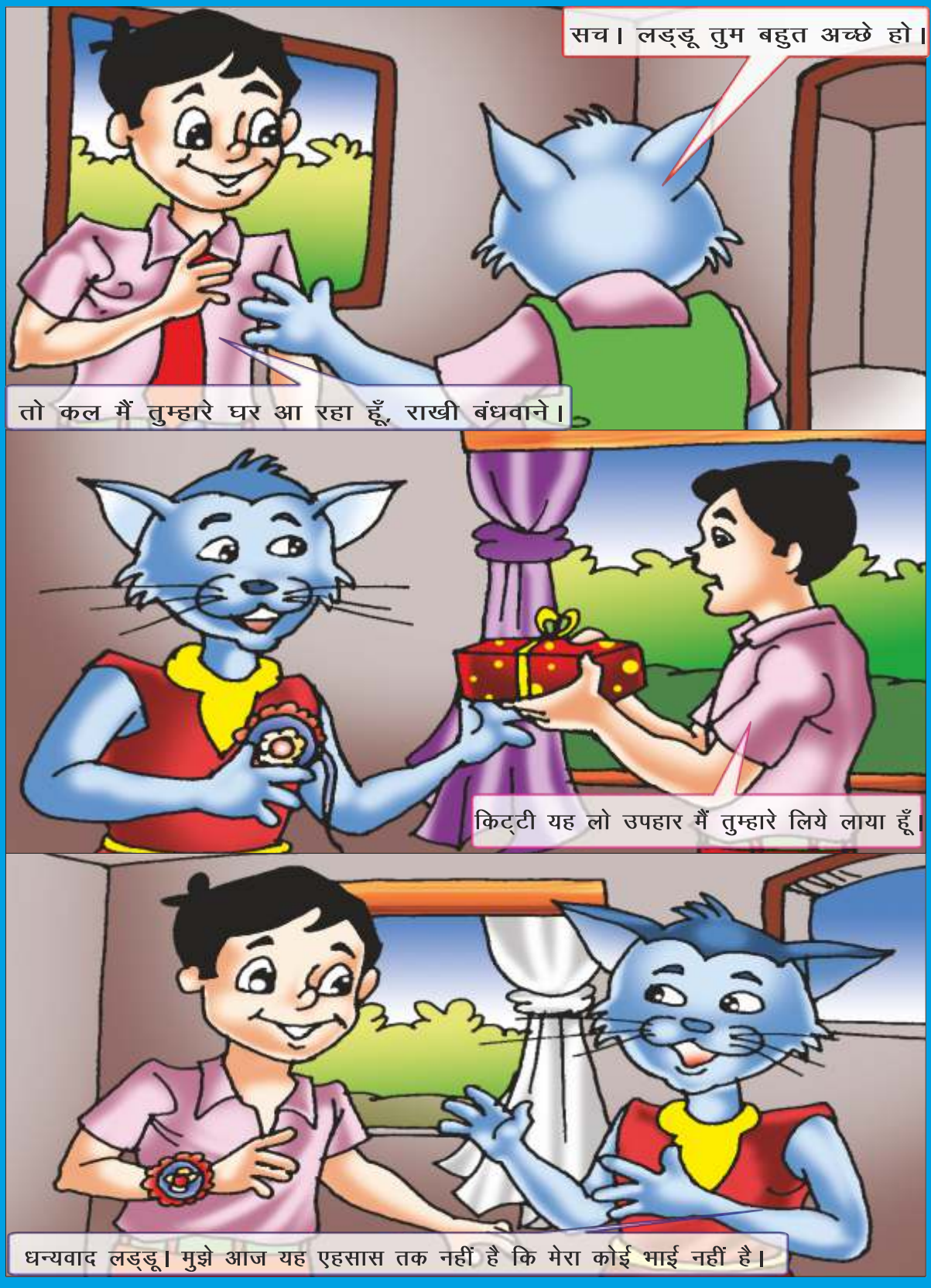
सच। लड्डू तुम बहुत अच्छे हो।
तो कल मैं तुम्हारे घर आ रहा हूँ, राखी बंधवाने।
किट्टी यह लो उपहार मैं तुम्हारे लिये लाया हूँ।
धन्यवाद लड्डू। मुझे आज यह एहसास तक नहीं है कि मेरा कोई भाई नहीं है।

बाल कविता : नदीम हसन चमन

देश की शान

नन्हें मुन्ने बच्चों की,
प्यारी सी मुस्कान है।
किलकारी इनके गीतों से,
बढ़ती देश की शान है।।

चंदा, सूरज, घटा, गगन से,
बढ़कर बच्चे प्यारे।
घुल–मिलकर जग में दिखते,
ये सब गगन के तारे।।

ज्ञानी–सा शिष्टाचार निभाते,
बड़ों का करते सम्मान।
बच्चे हैं कहलाते किन्तु,
चलें वीरों सा सीना तान।।

जीवन मानो इनका,
किलकारी और फुहार है।
इनमें देख प्रेम एकता,
देश लुटाता प्यार है।।

बाल कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

कालू सुधर गया

कालू आठवीं कक्षा में पढ़ता था। वह बहुत आलसी था। पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। इसलिए वह स्कूल भी कम ही जाया करता था। कालू की मां घर में ही रहती थी। कालू के पिताजी एक कारखाने में काम करते थे। वे सुबह जल्दी जाया करते थे और सायंकाल देरी से घर लौटते थे।

कालू प्रतिदिन घर से अपना थैला लेकर स्कूल के लिए निकलता था लेकिन वह स्कूल में न जाकर दिनभर इधर–उधर भटकता रहता था और स्कूल की छुट्टी के समय घर आ जाया करता था। कालू के माता–पिता सोचते थे कि उनका बेटा कालू नियमित स्कूल जा रहा है।

स्कूल से नाम कटने के डर से कालू कभी–कभी स्कूल भी चले जाया करता था जिसके कारण स्कूल से उसका नाम नहीं काटा जाता था। जब अध्यापक उससे पूछते कि वह इतने दिन अनुपस्थित क्यों रहा तो वह बड़े दुःखी मन से कह देता था, गुरुजी, मेरी मम्मी बीमार है। कभी वह कह देता– मेरे पापा बीमार हैं, तो कभी कह देता– घर पर काम हो गया था।

इस प्रकार उसने लगभग पूरा वर्ष गुजार दिया।

अपने आलस और लापरवाही के कारण परीक्षा में उसके पेपर भी अच्छे नहीं हुए। परिणामस्वरूप वह परीक्षा में फेल हो गया।

जब कालू के पिताजी को यह मालूम हुआ तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। वह कितनी मेहनत से एक–एक पैसा बचाकर और अपना पेट काटकर

अपने लाड़ले को पढ़ा रहे थे और उससे कितनी आशा लेकर चल रहे थे लेकिन....!

कालू ने कभी इस ओर ध्यान दिया ही नहीं था।

कालू के पिताजी सोचने लगे कि उनका लाड़ला प्रतिदिन स्कूल जाता है। घर पर भी उससे अधिक काम नहीं करवाते, फिर वह फेल कैसे हो गया। यह जानने के लिए वे एक दिन स्कूल में आकर प्रधानाध्यापक महोदय से कालू के विषय में पूछने लगे।

जब प्रधानाध्यापक महोदय ने उन्हें कालू के विषय में यह बताया कि वह स्कूल में नियमित रूप से नहीं आता है इसलिए फेल हुआ है तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। उन्होंने प्रधानाध्यापक महोदय को बताया कि वह तो घर से प्रतिदिन स्कूल आता है। तब प्रधानाध्यापक महोदय ने कालू को उसकी कक्षा से बुलवाया और उसे धमकाया। फिर उसे समझाते हुए बोले– 'देखो बेटा! तुम हमेशा झूठ बोल–बोलकर स्कूल नहीं आये। इसमें नुकसान किसका हुआ? इससे तुमने अपने जीवन का बहुमूल्य एक वर्ष गंवा दिया है और तुम्हारे पिताजी के खून–पसीने की कमाई भी गंवाई है। बताओ इससे तुम्हें क्या लाभ हुआ? यह बुरी बात है। ऐसी बुरी आदत किसी भी विद्यार्थी को शोभा नहीं देती क्योंकि इसका परिणाम सर्वदा हानिकारक ही होता है। यदि तुम स्कूल नियमित रूप से आते और अच्छी मेहनत करके पढ़ाई करते तो तुम फेल नहीं होते और तुम अच्छे अंकों से पास होकर आगे की कक्षा में चले जाते तो तुम्हारा एक वर्ष बेकार नहीं होता और तुम्हारे पिताजी की मेहनत की कमाई भी बेकार नहीं जाती। अब तुम्हें पुनः एक वर्ष इसी कक्षा में पढ़ना होगा और तुम्हारे पिताजी को उतना ही पैसा और लगाना पड़ेगा तुम्हारी एक ही कक्षा के लिए...।

यह सुनकर कालू को अपनी गलती का आभास हो गया। अब वह मन ही मन पछताने लगा– काश! मैं नियमित स्कूल आता और मन लगाकर पढ़ाई करता तो आज फेल नहीं होता और आगे की कक्षा में चला जाता। अब मुझे एक वर्ष फिर इसी कक्षा में पढ़ना पड़ेगा। सोचते–सोचते उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय किया कि अब वह ऐसी गलती नहीं करेगा और आगे मन लगाकर पढ़ाई करेगा। फिर उसने प्रधानाध्यापक महोदय एवं अपने पिताजी से क्षमा मांगी और भविष्य में कभी ऐसी गलती नहीं करने का प्रण किया।

इसके बाद कालू ने कभी ऐसी गलती नहीं की और आगे नियमित रूप से वह अच्छी मेहनत करते हुए सभी कक्षाओं में अच्छे अंकों से पास होने लगा।

अब उसके माता–पिता और अध्यापक खुश थे।

पहेलियों के उत्तर :

1. सियार, 2. दीया, 3. मुधमक्खी का छत्ता, 4. आसमान, 5. चश्मा, 6. मोमबत्ती, 7. द्रव्य, 8. हवाई जहाज, 9. गैस, 10. तकिया, 11. पपीता, 12. दीया की बत्ती, 13 दांत, 14. गन्ना।

जानकारी : कैलाश जैन, एडवोकेट

आदमी से पहले धरती पर आया कछुआ!

प्रायः हमारे दिमाग में कछुए की छवि अपनी धीमी चाल के बावजूद खरगोश से दौड़ जीतने वाले प्राणी के तौर पर बनी हुई है। इस मशहूर कहानी ने कछुए को बेपनाह शोहरत दिलवायी है। यह प्राणी इस धरती पर मानव–सभ्यता के उदय से बहुत पहले ही आ चुका था। शरीर–वैज्ञानिक शारीरिक संरचना के नजरिये से इसका रिश्ता विशालतम प्राणी डायनासोर से जोड़ते हैं, जिसके बारे में माना जाता है कि वह इस धरती के पहले जीव थे।

जल और थल दोनों जगह रहने वाले इस उभयचर प्राणी को सरीसृप वर्ग का सदस्य माना जाता है। चार पैरों वाले इस प्राणी का समूचा शरीर एक सख्त खोल से ढका रहता है। यह खोल पृष्ठ तल पर चपटी और वृताकार प्लेट से बने आवरण की तरह होता है, जो इसके नाजुक शरीर को शत्रुओं से सुरक्षा प्रदान करता है। इसके गोल सिर पर दो छोटी–छोटी आंखें होती हैं तथा एक कठोर चोंच होती है। किसी भी खतरे का आभास होते ही यह अपनी गर्दन सहित समस्त अंगों को खोल के भीतर समेट लेता है। त्वचा से ढके हुए कान एवं छोटी–सी चपटी पूंछ इसकी खास विशेषता है। इसके मुंह में दांत नहीं होते हैं, बल्कि दांत की जगह एक सख्त हड्डी होती है, जिसे यह अपने शिकार को काटने के लिए इस्तेमाल करता है।

कछुओं की लगभग ढाई सौ प्रजातियां खोजी जा चुकी हैं, जिन्हें मुख्यतया तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। समुद्री कछुए, टेरापींस अथवा ताजे पानी के कछुए तथा स्थलीय कछुए।

समुद्री कछुए आकार–प्रकार की दृष्टि से अपेक्षाकृत बडे और विशाल होते हैं। इनमें लेदरी कछुए प्रमुख हैं। इसकी लम्बाई दो मीटर तथा वजन 500 कि.ग्रा. तक होता है। यह भारत के निकोबार द्वीप–समूह के आसपास बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं। ये कछुए नन्हीं जैली–फिश का शिकार करते हैं। इस प्रजाति के कछुए समुद्र में पांच सौ मीटर से भी अधिक गहराई तक गोता लगा सकते हैं।

समुद्री कछुओं में दूसरी बड़ी प्रजाति ग्रीन कछुआ है। इसे संसार में सर्वाधिक मूल्यवान कछुआ माना जाता है। यह भारत में प्रायः सभी समुद्र तटों पर पाया जाता है। इस जाति के रिडले नामक कछुए का वजन 50 से 70 किलोग्राम तक तथा लम्बाई 75 सेंटीमीटर के लगभग होती है। आदमी द्वारा इनके अन्धाधुन्ध शिकार तथा पर्यावरण सम्बन्धी असन्तुलन के कारण कछुओं की ग्रीन प्रजाति लुप्त होने के कगार पर है। समुद्री कछुओं के वर्ग में हावसबिल, लोग्गर, हेडरा नामक प्रजातियां उल्लेखनीय हैं।

ताजे पानी की झीलों, तालाबों एवं नदियों में रहने वाले कछुओं की तकरीबन दो सौ प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें सिर एवं पैरों को अपने खोल में समेटने की क्षमता होती है। आमतौर पर इन कछुओं का खोल बड़ा एवं सख्त होता है, मगर कुछ प्रजातियों के कछुओं के खोल मुलायम एवं नर्म होते हैं।

स्थलीय कछुए की पैंतीस प्रजातियां पाई जाती हैं। ये कछुए आमतौर पर जमीन पर ही रहते हैं। सिर्फ पानी पीने या नहाने के लिए ही जल तक जाते हैं। ये कछुए सामान्यतः गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में रहना पसन्द करते हैं।

उम्र के मामले में कछुए वाकई भाग्यशाली होते हैं। इनकी औसत आयु सौ वर्ष मानी गई है। कुछ वैज्ञानिकों की मान्यता है कि कछुए अधिकतम तीन सौ वर्षों तक जी सकते हैं।

स्थलीय कछुओं में एक प्रजाति के कछुए का वजन 680 किलोग्राम तक होता है। वैसे सिर्फ एक इंच लम्बाई के कछुए भी पाये जाते हैं।

कछुए की कुछ प्रजातियां शाकाहारी होती हैं, जो हरी घास, पत्तियां, बीज, गिरे हुए फल आदि खाती हैं। इसके विपरीत कुछ प्रजातियों के कछुए खासतौर से समुद्री कछुए मांसाहारी होते हैं तथा मछलियों, मेंढकों और अन्य समुद्री जीवों से अपना पेट भरते हैं।

चाल के मामले में बेचारा कछुआ बहुत धनवान है। यह अपनी शारीरिक बनावट के कारण जमीन पर बहुत कम गति से चल पाता है। किन्तु लेदर बैक टर्टल कछुआ खतरे की अवस्था में पैंतीस किलोमीटर प्रति घंटा की गति से भाग सकता है।

कछुआ बहुत प्राचीन काल से ही आदमी के लिए बहुत उपयोगी रहा है। प्राचीन समय में तलवार के वार से बचने के लिए कछुए की पीठ से बनी ढाल का इस्तेमाल होता था। आजकल कछुए के सख्त खोल पर कलाकृतियां बनाकर उन्हें ड्राइंगरूम में सजाने का फैशन चल पड़ा है।

कछुए हमारे पर्यावरण–सन्तुलन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। अपने स्वार्थ के लिए आदमी द्वारा इनकी बड़े पैमाने पर की जा रही हत्याओं के चलते मुख्य प्रजातियों के कछुए लुप्त होने के कगार पर पहुँच गये हैं।

दो बाल कविताएं : घमंडीलाल अग्रवाल

सूरज बनकर

सूरज एक सितारा है,
हर प्राणी को प्यारा है।

इसके कारण ही भाई,
पड़े वस्तुएं दिखलाई।

इसकी किरणें पाते जब,
भोजन पेड़ बनाते तब।

धरती को गरमी देता,
तन की ठिठुरन हर लेता।

कोश विटामिन 'डी' वाला,
जो हड्डी का रखवाला।

सभी ग्रहों का मुखिया,
एक जगह इसकी कुटिया।

हरकर वसुधा के तम को,
सूरज बनकर तुम चमको।

हम अलबेले

आगे बढ़ते हम अलबेले,
बाधा सहते, हम अलबेले।

थक कर जहाँ ठहरते सारे,
हैं चल पड़ते, हम अलबेले।

प्यार, प्रीति की सरिता में ही,
हरदम बहते, हम अलबेले।

मेलजोल की नित हँस हँस कर,
पोथी पढ़ते, हम अलबेले।

संकट वाली कठिन घड़ी में,
हँसते रहते, हम अलबेले।

पढ़ो और हँसो

एक बच्चा पैदा हुआ और नर्स उसे नहलाने लगी तो बच्चा बोल पड़ा– सिस्टर, जरा मोबाइल देना तो।

सिस्टर : किसलिए?

बच्चा : जरा फोन करके बता दूँ कि मैं ठीक–ठाक से पहुँच गया हूँ।

– डॉ. रामलखन प्रजापति (आजमगढ़)

★ ★ ★

अपने गले का ऑपरेशन होते ही बंता ने पानी–पानी की रट लगा दी।

नर्स परेशान थी। उसने कभी ऐसा मरीज नहीं देखा था, जिसे ऑपरेशन होते ही प्यास लग जाए।

वह बंता को पानी का गिलास थमाते हुए बड़बड़ाई– ऐसी भी क्या प्यास है जरा–सा भी सब्र नहीं है?

बंता बोला– सिस्टर प्यास नहीं लगी है। मैं तो यह चेक करना चाहता हूँ कि ऑपरेशन के बाद मेरा गला लीक तो नहीं कर रहा है।

★ ★ ★

एक आदमी धोबी को डांट रहा था। एक तो तूने मेरी कमीज गुम कर दी, ऊपर से धुलाई के पैसे मांग रहा है।

धोबी नम्रता से बोला– साहब! कमीज धुलने के बाद गुम हुई है।

★ ★ ★

अंकल : राजेश, सुना है तुम्हारे घर में नया 'बेबी' आया है।

राजेश : जी नया क्या कहते हैं आप! जब रोता है तो लगता है कि वर्षों से रोना सीखकर आया है।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

कुछ लोग चन्दा लेने एक धनी कंजूस व्यक्ति के पास गये। चन्दा के लिए कंजूस ने 101 रुपया का चेक काटकर दे दिया।

– आपने चेक पर दस्तखत नहीं किये हैं।– एक व्यक्ति कंजूस से बोला।

– भइया, दान देकर मैं अपना नाम उजागर नहीं करता हूँ। गुप्त–दान ही सबसे अच्छा दान है।– व्यक्ति बोला।

★ ★ ★

टीटी : (यात्री से) तुमने टिकट लिया?

यात्री : (टीटी से) तुमने लिया।

टीटी : नहीं।

यात्री : खुद बिना टिकट के चलते हो और मुझे टिकट लेने के लिए कह रहे हो?

★ ★ ★

एक छाताधारी सैनिक से उसके अफसर ने पूछा– तुमने कितनी बार हवाई जहाज से छलांग लगाई है।

–केवल एक बार– सैनिक ने उत्तर दिया।

–लेकिन तुम्हारे सर्विस रिकॉर्ड में तो पन्द्रह बार लिखा हुआ है।

–बाकी चौदह बार तो मुझे धकेला गया था।– सैनिक बोला।

★ ★ ★

राजेश : (विजय से) मुझे खुशी इस बात की है कि मेरा बॉस एक डॉक्टर है।

विजय : (राजेश से) ऐसी क्या खासियत है आपके बॉस में।

राजेश : मैं थोड़ा–सा भी बीमार पड़ता हूँ तो वह मुझे फौरन 'बैड–रेस्ट' की सलाह दे देता है।

– डॉ. टुनटुन (दिधवा,गोपालगंज)

पति : कल तुम मायके गई हुई थी कि रात घर में चोर घुस आए। उन्होंने मुझे खूब मारा–पीटा, यहाँ तक कि मुझे मुर्गा भी बना दिया।

पत्नी : क्या आपने शोर नहीं मचाया?

पति : मैं कोई डरपोक हूँ जो शोर मचाता।

★ ★ ★

वकील : (अपराधी से), चाकू पर तुम्हारी उंगलियों के निशान पाए गये हैं। खून तुमने ही किया है।

अपराधी: वकील साहब! आप कैसे कह सकते हैं कि चाकू पर मेरी उंगलियों के निशान पाए गये हैं...? खून करते समय मैंने तो दस्ताने पहन रखे थे।

★ ★ ★

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई।

वह कहने लगा– हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो–दो ट्रक।

★ ★ ★

प्रिंस, उज्ज्वल और पुलकित एक मोटर साइकिल पर कहीं जा रहे थे। पुलिस ने रोक लिया।

पुलिसवाला : क्या आप लोगों को पता नहीं है कि मोटरसाइकिल पर 3 सवारी की पाबंदी है?

पुलकित : पता है इसीलिए तो एक को वापिस छोड़ने जा रहे हैं।

★ ★ ★

गृहिणी : (दूध वाले से) सुबह 6 बजे दूध देने आया करो।

दुध वाला : मैडम जल्दी नहीं आ सकता क्योंकि 6 बजे नल में पानी नहीं आता।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

सोनू : (पापा से) पापा, अगर आप को पता चले कि मैं क्लास में फर्स्ट आया हूँ तो आप क्या करोगे?

पापा : अरे बेटा मैं तुझे एक नई साइकिल दिला दूंगा।

सोनू : पापा मैंने आपके पैसे बचा दिये। मैं फेल हो गया हूँ। अब साइकिल लेने की जरूरत नहीं है।

– शोभिता गुप्ता (सतना)

★ ★ ★

एक दुकान पर एक व्यक्ति बड़ी देर तक चीजों को हाथ में उठाता, देखता, दाम पूछता और रख देता।

उसे कुछ भी खरीदते न देखकर दुकानदार ने झुंझलाते हुए पूछा – महाशय जी, आखिर आपको चाहिए क्या?

व्यक्ति बोला – मौका।

– रोहित कुदंनानी (धुलिया)

★ ★ ★

एक बच्चा दौड़ता हुआ आया और माँ से कहा –

हमारे पड़ौसी बहुत गरीब हैं, उनके बच्चे ने एक रुपए का सिक्का निगल लिया है और वे सब रो रहे हैं।

★ ★ ★

एक पड़ौसी : (दूसरे पड़ौसी से) तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ौसी : फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

★ ★ ★

योगिता : क्या कल तुम्हारी पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही है?

अर्पिता : हमारी क्लास तो नहीं पर हाँ बच्चे जरूर पिकनिक पर जा रहे हैं।

– ऊर्जा कुंदनानी (धूलिया)

★ ★ ★

जन्म दिन मुबारक

सीरत (यू.एस.ए.)

माधव (पीलीबंगा)

मधुरता (अमरावती)

अंजलि (दिल्ली)

शैलजा (उदयपुर)

शोभित (दिल्ली)

जीत (बल्लारपुर)

विदिता (लखनऊ)

प्राप्ति (कांदिवली)

सुखमीत (चण्डीगढ़)

प्रतीक (सिकन्दराबाद)

निर्जला (माहौर)

सरबजीत (जैतोमण्डी)

सुखप्रीत (मानसा)

शैलेन्द्र (अंकलेश्वर)

जश्नजोत (भनोहड़)

सुधित (दिल्ली)

ऋद्धिका (जामनगर)

मीनाक्षी (उधाना)

अनमोलदीप (मानसा)

अनिकेत (गोरखपुर)

अनुराग (मोहाली)

मानवी (अंकलेश्वर)

वान्या (अलीगढ़)

सक्षम (रफीगंज)

श्रीश (नगीना)

इकमजोत (मुक्तसर)

केनिशा (दिल्ली)

निवेदिता (भूसावल)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नया सदस्य हूँ। ये बाल पत्रिका बच्चों को अच्छे संस्कार और अच्छी शिक्षा देती है। इसका मैं बेसब्री इन्तजार करता हूँ।

मई अंक मिला इसमें 'वीर बालक दूधा' और 'गरीब का बेटा किलेंथिस' एवं 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' बहुत ज्ञानवर्द्धक थे।

– रघुराज किशोर (डाँगोली बाँगर)

मैं पिछले तीन सालों से हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। बच्चों की अन्य पत्रिकाओं से हँसती दुनिया अपने आप में अद्वितीय है।

बिना विज्ञापन के इतनी कम कीमत में ऐसी पत्रिका का मिलना मुश्किल है।

वास्तव में इस पत्रिका की सुन्दर छपाई और मनमोहक चित्र हमें आकर्षित करते हैं। इसकी भाषा शैली भी बहुत अच्छी होती है, बच्चों को समझते देर नहीं लगती है।

अप्रैल 2016 का अंक पढ़ा। संपादकीय लेख 'मानव उद्देश्य' बहुत अच्छा लगा। स्तम्भों में 'अनमोल वचन' एवं 'कभी न भूलो' तथा अन्य प्रेरक–प्रसंग बहुत अच्छे लगे। वे सभी रोचक भी थे।

'अन्न का आदर करें', 'दूसरे का भरोसा मत करो' तथा 'हमारी घड़ी' कहानियां पसन्द आईं।

'सम्पूर्ण अवतार बाणी' तथा 'चित्रकथाएं' भी खूब पसन्द आईं।

– विष्णुदेव मण्डल (गनौली, समस्तीपुर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। यह हर माह समय पर ही मिल जाती है तथा सुसंस्कृत और साफ–सुथरी पत्रिका का दूसरा नाम है हँसती दुनिया।

मुझे इसकी कविताएं अच्छी लगती हैं। मुझे 'दादाजी' और 'किट्टी' की चित्रकथाएं भी बहुत पसन्द हैं। मैं 'पढ़ो और हँसो' को बहुत पसन्द करता हूँ। इसमें से याद कर अपने दोस्तों को सुनाकर हँसता और हँसाता हूँ।

– दीपांशु (गाँधी नगर)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 रा	■	2 ब	3 ज	रं	4 ग
5 ज	हाँ	■	हा	■	णि
गो	■	6 गु	ज	7 रा	त
8 पा	ता	ल	■	9 य	ज्ञ
ला	■	कं	■	पु	■
चा	■	10 द	11 श	र	12 थ
13 री	छ	■	क्ति	■	ल

जून अंक का रंग भरो परिणाम

प्रथम :

अनुपमा कोहली
आयु 15 वर्ष
गाँव व पोस्ट : जैंती,
जिला : अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

द्वितीय :

रोहित चौधरी
आयु 12 वर्ष
म. नं. 35/1, मोती भवन,
जगतदल (बंगाल)

तृतीय :

निष्ठा बांगा
आयु 13 वर्ष
म. नं. ई–157,
वेस्ट पटेल नगर (दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सुहानी (मोतियाखान, दिल्ली),
अक्षय कुमार (से. 46–बी, चण्डीगढ़),
पार्थ सेठी, हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गाँव), शगुन (पुलिस लाईन, अल्मोड़ा),
साक्षी निरंकारी (रावतसर),
संगीता चौबे (बाग बाजार, कोलकाता),
भूमिका कुमारी (फेस–6, मोहाली),
रोशनी (टेलीफोन कालोनी, यमुनानगर),
अखिलेश राणा, खुशी राणा (अमरापुरी),
नव्या अरोड़ा (फव्वारा, आगरा),
आदित्य सेन (लक्ष्मी विहार कालोनी),
वेदिका गैरोला (बकरालवाला),
लतिका प्रसाद (तलावड़ी सर्कल),
रितिका कुमारी (भागवतपुर),
सुमति सिंह (पुरोला),
रिया (मलकापुरम),
दीप्ति राणा (धनास),
यवनिका ठाकुर (भरमोटी कलां),
अर्पित अरोड़ा (देहरादून),
जसराज (किचलू नगर),
सादिक कश्यप (मोहाली)।

अगस्त अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 अगस्त तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अक्टूबर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

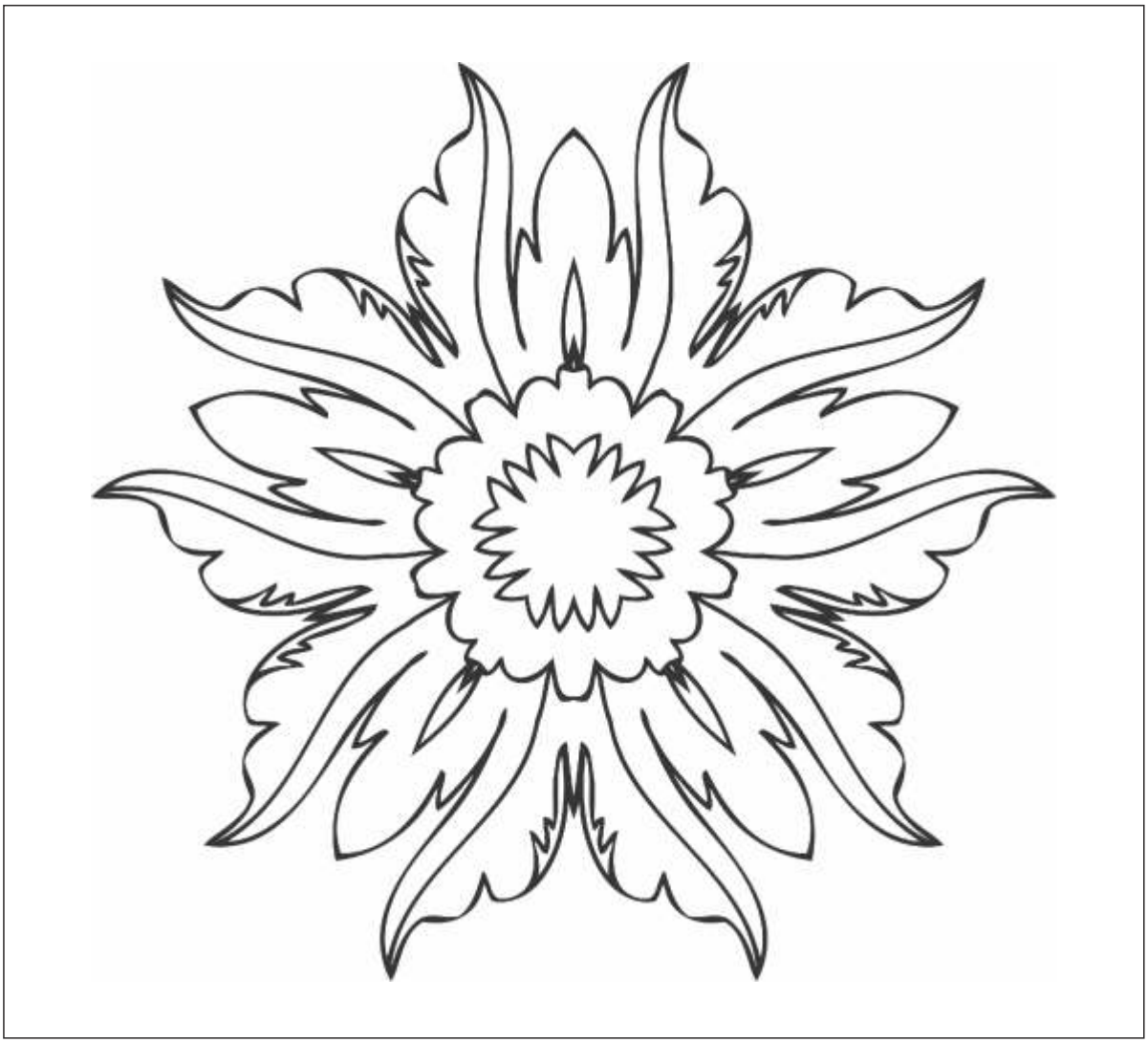

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

चित्र पहेली

– चाँद मोहम्मद घोसी

एक से 75 तक के बिन्दू मिलाकर रेगिस्तान के जहाज का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए

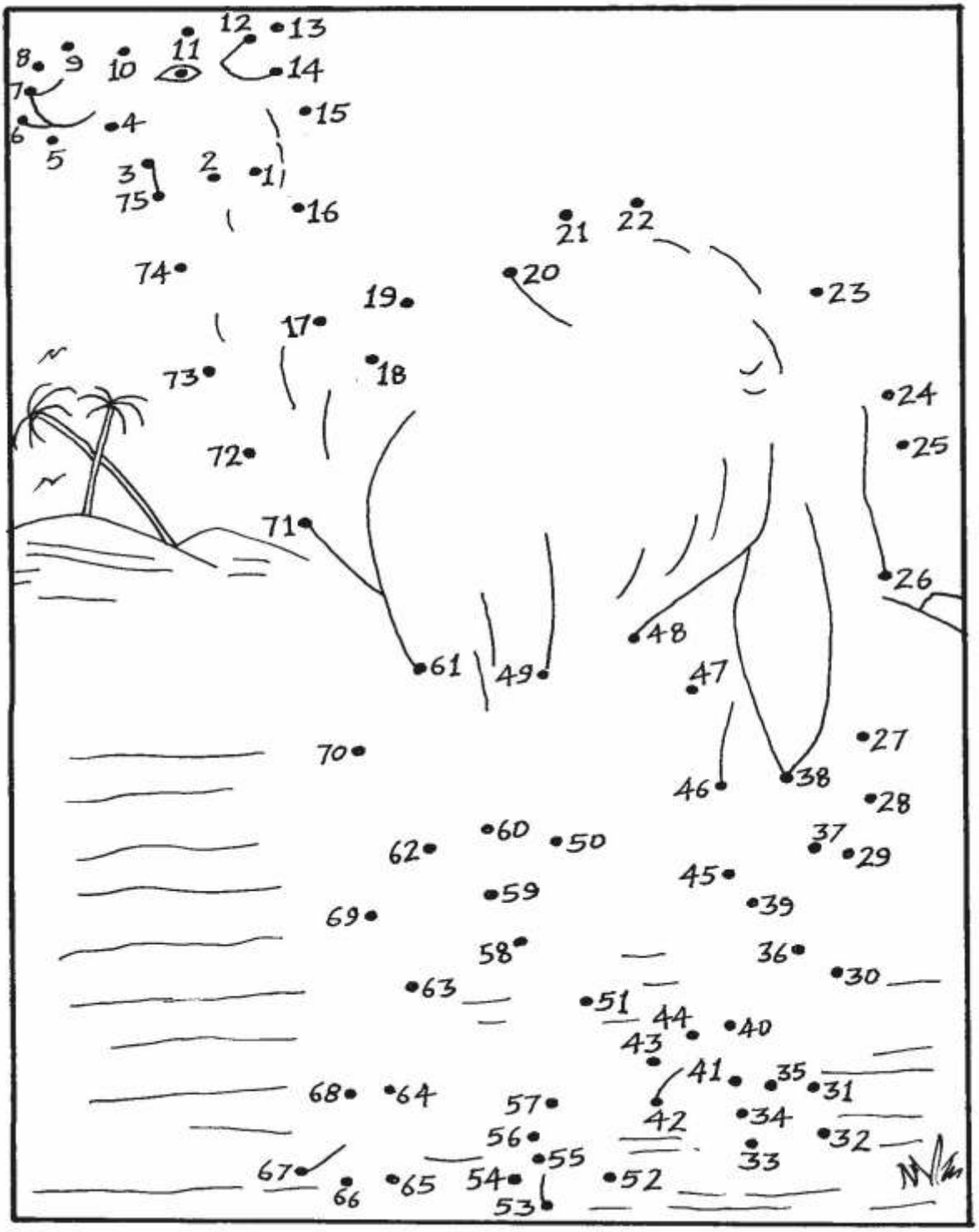

Service with Humility

SANT NIRANKARI CHARITABLE FOUNDATION

ANNOUNCES

NIRANKARI INSTITUTE OF music and arts

Courses offered Dance, Vocal and Instrumental:

- Vocal (Classical)
- Vocal (Light)
- Harmonium
- Keyboard
- Guitar
- Tabla

Affiliated to
Prayag Sangeet Samiti, Allahabad

Sant Nirankari Public School, Nirankari Colony
Email: nvc@nirankarifoundation.org
Website: www.nirankarifoundation.org

Follow us:

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)